मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओ देसाओ
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद -१४

पहली आवृत्ति २०००, १९५५
पुनर्मुद्रण ८०००

प्रकाशकका निवेदन

लगभग पाच वर्ष पहले नवजीवनने गोपाल कृष्ण गोखलेके विषयमें गांधीजीके लगभग सारे गुजराती लेखोंका संग्रह करके पुस्तकरूपमें प्रकाशित किया था। अुस पुस्तिकाके प्रकाशनके बाद अुसके अंग्रेजी और हिन्दी संस्करणकी हमेशा माग होती रही है। गोखले अखिल भारतीय नेता थे। भारतमें और भारतके बाहर अनेक लोग अुनके घनिष्ठ संपर्कमें आये थे और अुनसे तथा अुनके कार्यसे प्रेम करते लगे थे। अुनके जीवन और कार्यने अुनके बादकी पीढ़ीके अनेक युवक-युवतियोंको प्रेरणा प्रदान की है।

गांधीजीने गोखलेमें भारतके आदर्श सेवकके दर्शन किये, यहा तक कि अुन्हें अपना राजनीतिक गुरु माना और अुनके जीवन तथा मिशनके अनुसार भारतके राजनीतिक क्षेत्रमें अपने जीवन और कार्यको ढालनेका प्रयत्न किया।

जिस चीजने गांधीजीको अपने गुरुके प्रति सबसे ज्यादा आकर्षित किया, वह था अुनका धार्मिक भावनासे राजनीतिक कार्य करनेका आग्रह। गोखलेका यह विश्वास था, और अपने जिस विश्वासके अनुसार अुन्होंने कार्य करनेका प्रयत्न किया, कि राजनीति तभी भारतके लोगोंकी सेवाका साधन हो सकती है जब अुसे धर्ममय बनाया जाय — अर्थात् राजनीतिक कार्यकर्ता सत्यशोधककी भावनासे अपना कार्य करे। गोखलेका यह आग्रह लगभग वैसा ही था, जैसा कि राजनीतिक ध्येयोंकी सिद्धिके लिये भी साधन-शुद्धिका गांधीजीका आग्रह था। जिस तरह गुरु और शिष्य दोनों अेक-दूसरेके प्रति अपनी समान श्रद्धासे ही आकृष्ट हुअे थे।

भारतके अिन दोनों महान सेवकोंके जीवनका यह पाठ युवक और युवतियोंकी भावी पीढ़ियोंके लिअे अमूल्य है, जो अपने देशकी सेवा करनेकी तमन्ना रखते हैं। गोखलेके विषयमें लिखते हुअे गांधीजीने यह अमूल्य पाठ अपने पाठकोंके सामने रखा है। नवजीवन ट्रस्टको और दूसरे कअी लोगोंको भी अैसा लगता था कि गोखलेके संबंधमें गांधीजीके लेख और भाषण, जो अेक अर्थमें स्वयं गांधीजीके सेवाके आदर्शका विवेचन करते हैं, भारत और भारतके बाहरके सच्चे जिज्ञासुओंके लिअे अुपलब्ध किये जायं। अिसलिअे गोखलेके संबंधमें लिखे या दिये हुअे गांधीजीके हर लेख या भाषणके संग्रहका यह हिन्दी संस्करण पाठकोंके सामने प्रस्तुत किया जा रहा है। अिस संग्रहमें कुछ अैसी सामग्री भी दी गअी है, जिसका गुजराती संस्करणमें समावेश नहीं हुआ है।

अिस पुस्तकमें 'गोखलेके साथ' नामक प्रकरणका पहला, दूसरा, पांचवां, आठवां और नवां भाग हिन्दी 'आत्मकथा' से तथा तीसरा, चौथा, छठा और सातवां भाग 'दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास' नामक हिन्दी पुस्तकसे लिया गया है, जिसके लिअे हम सस्ता-साहित्य-मंडल, दिल्लीके आभारी हैं।

यह पुस्तक अगली १९ फरवरीको गोखलेकी पुण्यतिथिके दिन प्रसिद्ध होगी। हमारा यह विश्वास है कि ये लेख और भाषण, जिनमें भारतके अैसे दो महानसे महान पुत्रोंके मानसकी झलक हमें मिलती है जिन्होंने हमारे अपने कालमें भारतके पुनर्जागरण और पुनरुत्थान पर अपना अमिट प्रभाव डाला है, अुन सब लोगोंके लिअे प्रेरक सिद्ध होंगे, जो भारतको और भी अधिक प्रगतिके पथ पर अग्रसर हुआ देखना चाहते हैं।

अहमदाबाद, १३-१-'५५

श्रद्धांजलि

यह पुस्तक* पुण्यश्लोक गोपाल कृष्ण गोखलेकी पैंतीसवीं पुण्य-तिथि पर प्रसिद्ध हो रही है। यह पूज्य गांधीजी द्वारा अुन पुण्यात्माके विषयमें लिखे हुअे लेखों और भाषणोंका संग्रह है। गांधीजीने अुन्हें अपने गुरुके रूपमें माना था, शिष्यभावसे अुनका अनुसरण किया था और बीस वर्षकी अवधि तक अुनका समागम किया था। गोखलेका जीवन कैसा था, अुनका चरित्र कैसा था, अुनके मनोरथ क्या थे, अुनकी विरासत क्या थी, और अुनका सन्देश क्या था — अिन सब बातोंका विवेचन अिन लेखों और भाषणोंमें मिलेगा। अिसमें पूर्ति कर सकनेवाला तो गांधीजीके समान गोखलेके गाढ़ सम्बन्धमें आये हुअे अुनके निकटके शिष्योंमें से ही कोअी हो सकता है। अुदाहरणके लिअे, पूज्य ठक्करबापा।

गोखलेका व्यक्तिगत परिचय प्राप्त करनेका मौका मुझे अपने जीवनमें नहीं मिला था। १९०७ की सूरत-कांग्रेसमें तथा अुसी अर्सेमें (१९०८–०९ में) विल्सन कॉलेजमें हुअी विद्यार्थियोंकी अेक सभाके अध्यक्षके रूपमें — अिस तरह दोसे अधिक बार मैंने अुन्हें देखा या सुना हो, अैसा मुझे याद नहीं। लेकिन अुनकी आवाज चांदीकी घंटी जैसी मधुर थी, अैसा मेरे कानों पर आज भी संस्कार बना हुआ है। अिस सभाके थोड़े दिन पूर्व हमारे अेक अध्यापक प्रोफेसर रॉबर्ट्सनसे सुना था कि गोखलेके जैसा व्याकरण-शुद्ध और अुच्चारण-शुद्ध अंग्रेजी बोलनेवाला दूसरा कोअी भारतीय अुन्होंने नहीं देखा। अिस कारणसे संभव है अुनका भाषण सुनते समय वे क्या कहते हैं अिसके बजाय वे कैसा बोलते हैं अिसी पर मेरा ध्यान अधिक अेकाग्र हुआ हो!

---

* नवजीवन ट्रस्ट द्वारा १९५० में प्रकाशित 'धर्मात्मा गोखले' नामक गुजराती संस्करण। कीमत ०.५६, डाकखर्च ०.१९।

लेकिन अिस विद्यार्थी-सभाके बारेमें अेक किस्सा यहां देने जैसा है। अिस सभाका आयोजन अुस समयके बम्बअीके सारे कॉलेजोंके विद्यार्थियोंके 'स्टुडन्ट्स यूनियन' ने किया था। 'दलित वर्गोंका अुद्धार' विषय पर श्री मनु सूबेदारका भाषण रखा गया था। और गोखलेने अध्यक्षपद ग्रहण करना स्वीकार किया था। सभा बड़ी ही होगी अैसा मानकर अुसे विल्सन कॉलेजमें रखनेके लिअे प्रिन्सिपाल डॉ० मेक्किनकी अिजाजत ले ली गअी थी। मैं यूनियनका कोअी पदाधिकारी नहीं था, लेकिन अुसके मंत्री मेरे मित्र थे, अिसलिअे मैं अुनके काममें सहायता करता था। ठीक सभाके दिन या अुससे अेक दिन पहले प्रिन्सिपाल साहबने अेक बड़ा विघ्न खड़ा कर दिया। अुन्होंने मंत्रीसे कहा: 'मि० गोखले आखिर राजनीतिक आदमी कहे जायंगे। वे यहां राजनीतिक विषय छेड़ें, यह मुझे पुसायेगा नहीं। अिसलिअे अुनसे यह वचन ले आओ कि वे अपने भाषणमें राजनीतिक विषयको नहीं छुअेंगे।' मेरे मित्रने कहा: 'यह तो समाज-सुधारका विषय है। अिससे राजनीतिका भला सम्बन्ध ही क्या है, जो अैसी शर्त रखनेकी जरूरत हो?' लेकिन प्रिन्सिपालने कहा, 'राजनीतिज्ञोंका कोअी भरोसा नहीं। वे हर बात हर जगह बोल सकते हैं। अिसलिअे अैसा वचन अुनसे ले आओ, वर्ना मेरा हॉल बन्द!' यह तो भारी मुसीबत खड़ी हो गअी। मेरे मित्रको लगा कि यह केवल गोखलेका अपमान करनेकी बात है। असी भद्दी बात अुनके समक्ष निकाली ही कैसे जा सकती है? लेकिन किया भी क्या जाय? अन्य स्थान पर सभा रखनेका समय नहीं था। अन्य स्थान पर सभाका आयोजन करनेका अर्थ यह होता कि यूनियन राजनीतिक विषयोंमें भी भाग लेनेका आग्रह रखता है, अिसीलिअे अुसने स्थान बदल दिया। अिससे कॉलेजके अधिकारियोंको, जो यूनियनको तोड़नेका प्रयत्न कर रहे थे, अेक निमित्त मिल जाता।

मेरे मित्र बड़ी परेशानीमें फंस गये। अुन्होंने कांपते हाथों गोखलेको पत्र लिखा। गोखलेका अुत्तर आया। अुन्हें अैसी सूचनासे बहुत बुरा लगा और अुन्होंने अध्यक्षपद ग्रहण करनेसे अिनकार कर दिया।

मेरे मित्रकी परेशानी और बढी। अुन्हींके शब्दोंमें अिस घटनाका आगे वर्णन करता हूं

"मुझमें डॉ० मेक्किनसे यह कहनेका साहस नहीं था कि अुनकी रखी हुअी शर्त अनुचित है। मैं श्री गोखलेसे मिला। कहते संकोच जरूर हुआ, लेकिन सारी बात मैंने अुनसे कह दी। पहले तो अुन्हें बड़ा गुस्सा आया। अुन्होंने मुझसे कहा, 'यह तो मेरा सरासर अपमान है। अिस शर्त पर मैं अध्यक्षपद स्वीकार नहीं कर सकता।' मैं रोने जैसा हो गया। मैंने कहा, 'सब लोग मुझे कहेंगे कि आप अध्यक्षपद ग्रहण करनेवाले हैं, अैसी झूठी घोषणा करके मैंने सबको धोखा दिया।' गोखलेजीको दया आअी। मुझसे बोले, 'बुरा न मानना। लेकिन हमारे लोगोंको मॉरल अिंडिग्नेशन (पुण्यप्रकोप, सात्त्विक रोष) का भान ही नहीं है। अैसी बात पर रोष प्रकट करना मेरा फर्ज है।' अुन्होंने यह भी कहा कि हमारे लोग बड़ों द्वारा किया हुआ कैसा भी दुर्व्यवहार, अपमान वगैरा सह लेते हैं और क्रोध प्रकट ही नहीं कर सकते बादमें वे बोले, 'मैं आअूंगा लेकिन अेक शर्त पर। डॉ० मेक्किनसे कहना कि मुझे भाषणमें क्या कहना चाहिये और क्या नहीं कहना चाहिये, यह बतानेका अुन्हें कोअी अधिकार नहीं है। यह वचन दो कि मेरी यह बात तुम अुनसे कहोगे।' मैंने यह वचन दिया। डॉ० मेक्किनसे गोखलेजीकी बात कहते हुअे संकोच तो बहुत हुआ, लेकिन मैंने कही जरूर। डॉ० मेक्किनने अपना आग्रह छोड़नेमें ही बुद्धिमानी समझी। अन्तमें गोखलेजी आये और अुन्होंने अध्यक्षपदसे अपना मननीय भाषण किया।"

बस, अितना मेरा गोखलेके साथ ज्ञानेन्द्रियों द्वारा अेकतरफा सम्बन्ध हुआ था।

गांधीजीने अपने सेवामय जीवनका मूल बिम्ब गोखलेके जीवनमें देखा, अैसा अिस पुस्तक परसे मालूम होता है। अुन्होंने

गोखलेके जीवनसे जो बोध लिये और अुनके जीवनके जिन आदर्शोंको सिद्ध करने योग्य माना, अुनका थोड़ा सार नीचे देता हूं:

"२० वर्ष तक शिक्षण देनेका काम करनेकी गोखलेने शपथ ली। अैसी लगन और निष्ठाके लोग ही जब शिक्षाके लिअे अपना जीवन समर्पण करते हैं, तभी शिक्षण सफल होता है।"

"हिन्दुस्तानके हर प्रान्तसे राजनीतिक कार्यके लिअे अपने-आपको अर्पण करनेवाले कमसे कम कुछ लोगोंके निकल पड़नेकी बहुत जरूरत है।"

"अुनका रहन-सहन अत्यंत सादा है। अुसे अुग्र तपस्या-वाला कहा जा सकता है। . . . अेक सच्चे ब्राह्मणके नाते अुन्होंने अपना जीवन गरीबी और ज्ञानको अर्पण कर दिया है। सादा जीवन और अूंचा काम — अिस अत्यंत प्राचीन भारतीय जीवन-पद्धतिका गोखलेसे बेहतर अुदाहरण दूसरा नहीं होगा।"

"किसी सहायताके बिना, मातहतोंके बिना और किसी प्रकारके मान-मर्तबे या खिताबोंके बिना सल्तनतका बोझ (गोखले) अकेले अुठाये जा रहे हैं।"

"पश्चिमकी शिक्षा पाये हुअे भारतीयोंके लिअे वे नम्रता और भलमनसाहतके सुन्दर अुदाहरण हैं।"

"अुन्होंने जो कुछ किया, जो कुछ भोगा, जो कुछ त्याग किया, जो दान दिया, जो तपस्या की, वह सब भारतमाताको अर्पण कर दिया था।"

"हसतां रमतां प्रगट हरि देखुं रे,
मारुं जीव्युं सफळ तव लेखुं रे,
मुक्तानन्दनो नाथ विहारी रे,
ओधा जीवन-दोरी अमारी रे.*

— यही दशा महात्मा गोखलेकी भारतके प्रति थी।"

---

* मैं हंसते, खेलते हरिको प्रत्यक्ष देखूं, तभी अपने जीवनको सफल मानूंगा। कवि मुक्तानन्द कहते हैं कि हे अुद्धव, भगवान कृष्ण ही हमारे नाथ और हमारे जीवनके आधार हैं।

"सेवकोंका कर्तव्य भारतके राजनीतिक जीवनको धार्मिक बनाना है।"

"मेरी आत्मा अिस बातकी साक्षी देती है कि अुन्होंने जिस समय जो काम किया, वह केवल धार्मिक वृत्तिसे ही किया।"

"जो पुरुष सदाचारी जीवन बिताता है, जिसकी वृत्तियां सादी हैं, जो नम्रतामय है, जो सत्यकी मूर्ति है, जिसने अपनेपनका आत्यन्तिक त्याग कर दिया है, वह पुरुष स्वयं जाने या न जाने तो भी धर्मात्मा है।"

"अेक संन्यासीने अुन पर यह आरोप लगाया कि अुन्हें हिन्दुत्वका अभिमान नहीं है। महात्मा गोखलेने भौंहें चढ़ाकर हृदयभेदी आवाजमें अुत्तर दिया यदि आप कहते हैं वैसा करनेमें (मुसलमानोंको नीचा मानकर हिन्दुओंको अूंचा बतानेमें) ही हिन्दुत्व हो तो मैं हिन्दू नहीं हूं। आप मेरे सामनेसे चले जायं।"

"जो (देशसेवाका) कार्य मैंने किसीके हुक्मसे अपने सिर नहीं लिया, अुसे किसीके हुक्मसे मैं छोड़ भी नहीं सकता। मेरा कर्तव्य-पालन करते हुअे यदि मैं लोकमतको अपने पक्षमें रख सकूं तो अुसे अच्छा मानूंगा, परन्तु अितना भाग्यशाली मैं न रहा तो भी अच्छा ही होगा।"

"हम सब केन्द्रीय धारासभामें प्रवेश नहीं कर सकते। ... पब्लिक सर्विस कमीशनमें नहीं जा सकते। ... अुनके जैसे विद्वान नहीं हो सकते। (यह सब कर सकनेवाले सारे लोग) देशसेवक ही होते हैं, अैसा भी हमारे अनुभवमें नहीं आता। लेकिन हम सब निर्भयता, सत्य, धैर्य, नम्रता, न्यायबुद्धि, सरलता, दृढ़ता आदि गुणोंका अपनेमें विकास करके अुन्हें देशको अर्पण कर सकते हैं। यह धार्मिक वृत्ति है। राजनीतिक जीवनको धर्ममय बनाया जाय — अिस महावाक्यका यही अर्थ है। ... अिस तरह आचरण करनेवाला महात्मा गोखलेकी विरासतमें हिस्सेदार होगा।"

"अुनकी तरह अपने काममें अेकरस हो जाना हममें से हरअेकके हाथकी बात है।"

"मुझे (गोखले) अपने मान-सम्मानकी बिलकुल परवाह नहीं, लेकिन देशका सम्मान तो मुझे प्राणोंके समान प्यारा है।"

"(दक्षिण अफ्रीकामें) अुनकी तबीयत सारे समय नाजुक ही रही। अुन्हें बहुत ज्यादा सार-संभालकी जरूरत थी। परन्तु अैसी नाजुक तबीयत होते हुअे भी रातके बारह बारह बजे तक वे काम करते रहते और सबेरे फिर दो बजे या चार बजे अुठकर कागज-पत्रोंकी मांग करते थे।"

"वे अिस तरह आगबबूला हो अुठे थे, मानो अपने गरीब देशबन्धुओं पर पड़नेवाला करका बोझ खुद अुन्हीं पर पड़ रहा हो। जनरल बोथाके समक्ष अुन्होंने अपनी आत्माकी संपूर्ण शक्तिका प्रयोग किया था। अुनकी बातोंका प्रभाव जनरल बोथा और जनरल स्मट्स पर अैसा पड़ा कि वे पिघल गये और अुन्होंने वचन दिया कि . . . यह कर रद्द हो जायगा।"

". . . अंत्यज वर्गके अुद्धारका प्रश्न भी महात्मा गोखलेको सदा चिन्तित रखता था। . . . कोअी अुन्हें टोकता तो वे साफ कह देते थे कि हमारे भाअी अन्त्यजोंको छूनेसे हम भ्रष्ट नहीं होते, बल्कि अस्पृश्यताकी दुष्ट भावना रखनेसे ही घोर पापमें पड़ते हैं।"

अिन सब अुद्धरणोंमें गांधीजीने गोखलेको 'महात्मा' की अुपाधि प्रदान की है। गांधीजी स्वयं अुस समय तक 'महात्मा' नहीं बने थे और भारतीय जगत गोखलेका अुल्लेख 'माननीय गोखले' के नामसे करता था। परन्तु गांधीजीने अपने हृदयमें अुन्हें आदर्श महात्माके रूपमें माना और अुनकी स्थापना की, अुस पदके साथ तादात्म्य सिद्ध करनेका आदर्श अपने सामने रखा और अुन्होंने जो जो गुण अपने गुरुमें देखे, अुन सबको अधिक मात्रामें अपनेमें प्रकट कर दिखाया। जगतने यह देखा और जो पद और सम्मान अुनके गुरुको नहीं

दिया वह अुन्हें अत्यंत प्रेम और स्वेच्छापूर्वक अर्पण किया। जो बालक और शिष्य अपने माता-पिता और गुरुके गुणोंको बढ़ा कर अिस तरह अपने जीवनमें प्रकट करे कि संसार अुसके पूर्वजोंको भूल जाय, वही अुनका सच्चा अुत्तराधिकारी कहा जायगा। गोखले अपने पीछे गांधी, शास्त्री, देवधर, ठक्कर वगैरा अैसे-अैसे शिष्योंको छोड़ गये, जिनमें से हरअेकने अुन गुणोंका अपने जीवनमें विकास किया और सेवाधर्मको अुनके द्वारा स्थापित की हुअी अेक संस्था भारत-सेवक-समाजमें से अनेक संस्थायें खड़ी कीं।

शिष्यको सच्चे गुरुकी प्राप्ति जितनी दुर्लभ होती है, अुतनी ही गुरुको सच्चे शिष्यकी प्राप्ति भी दुर्लभ होती है। दोनोंका संगम होना अेक विरल घटना है। वह दोनोंमें धन्यताकी भावना पैदा करता है और जगतका कल्याण करता है।

"आश्चर्यो वक्ता कुशलोऽस्य लब्धाऽऽश्चर्यो ज्ञाता कुशलानुशिष्ट। त्वादृङ्नो भूयान्नचिकेत. प्रष्टा।"* — अैसी धन्यता यमको नचिकेता जैसा शिष्य प्राप्त करनेसे अनुभव हुअी थी।

अिसी तरह गोखले भी धन्य हैं, जिन्हें गांधी, शास्त्री, ठक्कर जैसे अनेक शिष्य प्राप्त हुअे, और ये शिष्य भी धन्य हैं, जिन्होंने अपने गुरुके शिष्यत्वको सुशोभित किया और अुनके कार्यको बढ़ाया!

बम्बअी, ५-२-'५०　　　　　　　　कि० घ० मशरूवाला

* भावार्थ — आत्मज्ञानका अुत्तम बोध करानेवाले गुरु बहुत थोड़े होते हैं। अिसी तरह अुसे ध्यानपूर्वक सुननेवाले शिष्य भी भाग्यसे ही मिलते हैं। अुसमें भी कुशल गुरुसे यह ज्ञान प्राप्त करनेवाले तो कोअी विरले ही होते हैं। हे नचिकेता, तेरे जैसा प्रश्न पूछनेवाला शिष्य मुझे बार बार मिले।

अनुक्रमणिका

	प्रकाशकका निवेदन	३
	प्रस्तावना — कि० ध० मशरूवाला	५
१.	धर्मात्मा — गोपाल कृष्ण गोखले	७
२.	गोखलेके साथ	९
	१. गोखलेसे मेरी पहली मुलाकात	९
	२. कलकत्तेमें गोखलेके साथ एक मास	१०
	३. गोखलेका दक्षिण अफ्रीकामें आगमन	१४
	४. गोखलेकी टॉल्सटॉय फार्मकी मुलाकात	२१
	५. गोखलेका प्रमाणपत्र	२३
	६. गोखलेकी दक्षिण अफ्रीकाकी यात्रा आगे बढ़ी	२४
	७. सत्याग्रहकी दृढ़ प्रतिज्ञा	२८
	८. गोखलेके साथ लन्दनमें	२९
	९. गोखलेके साथ पूनामें	३२
३.	महात्मा गोखलेकी विरासत	३४
४.	मेरे जीवनमें गोखलेका स्थान	४९
५.	गोखलेके विषयमें भाषण	५४

गोखले

मेरे राजनीतिक गुरु

कॉलेजमें दाखिल हुअे लगभग अुसी अरसेमें वे स्व० श्री महादेव गोविन्द रानडेके समागममें आये थे, जिनकी बदौलत ही मुख्यतः गोखलेके जीवनका निर्माण हुआ था। न्यायमूर्ति रानडेके कुशल मार्गदर्शनमें अुन्होंने बारह वर्ष या अुससे भी अधिक समय तक अर्थशास्त्रका अध्ययन किया था। अुसीका यह परिणाम है कि आज हिन्दुस्तानमें आर्थिक प्रश्नों पर जिनके मत आधारभूत माने जा सकते हैं, अैसे गिने-गिने लोगोंमें गोखलेका स्थान है। गोखले स्व० श्री रानडेके प्रति अत्यंत पूज्य भाव रखते हैं और अुन्हें अपने गुरुके रूपमें मानते हैं। १८८७ में श्री रानडेकी अिच्छासे पूना सार्वजनिक सभाकी ओरसे निकलनेवाले 'क्वार्टर्ली जर्नल' (त्रैमासिक पत्र) के संपादनका पद अुन्होंने स्वीकार किया। अिसके बाद तुरन्त वे डेक्कन सभाके ऑनरेरी सेक्रेटरी नियुक्त हुअे। पूनाके अेंग्लो-मराठी साप्ताहिक 'सुधारक' के भी वे संपादक थे। बम्बअीकी प्रोविन्शियल कान्फरेन्सके वे चार वर्ष तक मंत्री रहे। १८९५ में पूनामें जो कांग्रेस हुअी थी, अुसके भी वे मंत्री नियुक्त हुअे थे। सार्वजनिक कार्यमें अुनकी समझ और सेवाकी अुनकी अुत्कंठा अितनी प्रख्यात हो गअी थी कि अुन्हें 'दक्षिणके अुदीयमान तारे' की अुपमा प्रदान की गअी थी। अैसी ख्यातिके कारण हिन्दुस्तानके खर्चके बारेमें जांच करनेके लिअे अिग्लैण्डमें जो वेल्बी-कमीशन बैठा था, अुसके सामने अपनी गवाही देनेके लिअे बम्बअीकी जनताने मि० वाच्छाके साथ गोखलेका भी चुनाव किया था। वहां अुन्होंने अिस विषयमें कीमती हकीकतें पेश की थीं।

वे अिग्लैण्डमें रहे अुस बीच अुन्होंने हिन्दुस्तानके कामकाजके बारेमें वहां कुछ भाषण दिये थे। प्लेगके सम्बंधमें बम्बअी सरकारने जो कार्रवाअी की थी और अुस काम पर तैनात किये गये गोरे सैनिकोंने कंपकंपी पैदा करनेवाले जो भयंकर काम किये थे, अुनकी कड़ी टीका छपवाकर अुन्होंने प्रसिद्ध की थी। १९०२ में वे फरग्यूसन कॉलेजसे २५ रुपयेकी पेन्शन लेकर सेवा-निवृत्त हुअे। अुसी अर्सेमें केन्द्रीय धारासभाके बम्बअीके प्रतिनिधि सर फीरोजशाह मेहताकी तबीयत खराब होनेके कारण अुनके स्थान पर गोखले चुने गये। यह

काम अुन्होंने अितने सुन्दर ढंगसे किया कि तबसे अुस स्थानके लिअे आज तक वे बार-बार चुने जाते रहे हैं।

केन्द्रीय धारासभामें गोखलेजीका चुनाव हुआ, तबसे अुनके सार्वजनिक जीवनका नया प्रकरण शुरू हुआ। यह घटना स्वदेश-सेवाकी अुनकी बरसोंसे बड़ी जीतके अितिहासके रूपमें मानी जाती है। बजटकी चर्चाके समय दिया हुआ अुनका पहला ही भाषण बड़ा प्रेरक माना जाता है। तबसे बजटके समय अुनके भाषण सुननेके लिअे सब लोग बड़े अुत्सुक रहते हैं। प्रतिवर्ष अुन्होंने यह सिद्ध कर दिखाया है कि बजटमें जो बचत बताअी जाती है वह कितनी झूठी होती है, अुससे हिन्दुस्तानकी जनताकी खुशहाली बिलकुल साबित नहीं होती। हर वर्ष वे यह माग करते रहे हैं कि सरकारी विभागोंमें भारतीयोंको ज्यादा संख्यामें नौकरियां दी जाय। कोअी साल अैसा नहीं गया जब फौजी खर्च घटानेकी अुन्होंने हिमायत न की हो। अुन्होंने हर साल यह माग की है कि नमक-कर रद्द कर दिया जाय और देशमें नहरोंका तथा अुद्योग-धंधोंकी शिक्षाका ज्यादा प्रसार किया जाय। हर साल सरकारसे अुन्होंने निःशुल्क और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा दाखिल करने और अैसे ही दूसरे सुधार करनेका भी आग्रह किया है। नमक-कर जो घटाया गया, वह बहुत संभव है अुनकी हिमायतसे ही घटाया गया हो।

हिन्दुस्तानके कुछ अूंचेसे अूंचे पदों पर काम करनेवाले अधिकारी अुनसे मित्रताका सम्बन्ध रखते हैं; और अभिमानी वाअिसरॉय लॉर्ड कर्जन भी अुन्हें अपना समवयस्क प्रतिस्पर्धी मानते थे। अुन्होंने कहा था कि गोखलेके साथ बहस करनेमें बड़ा आनन्द आता है। अैसा भी सुना गया है कि अुन्होंने गोखलेके विषयमें यह कहा था कि अुनके संपर्कमें जितने लोग आये, अुनमें गोखले सबसे बलवान हैं। यद्यपि कौंसिलमें गोखले लॉर्ड कर्जनके सामने कभी न झुकनेवाले विरोधी थे, फिर भी लॉर्ड कर्जनने अुनकी योग्यता सुन्दर व्यवहारके सम्मानके चिह्नके रूपमें अुन्हें सी० आअी० -

[illegible]

२. कलकत्तेमें गोखलेके साथ ओक मास

पहले ही दिनसे गोखलेने मुझे यह नहीं समझने दिया कि मैं मेहमान हूं। मुझे अिस तरह रखा मानो मैं अुनका सगा छोटा भाओी हूं। मेरी सब आवश्यकतायें जान लीं और तदनुसार प्रबंध कर दिया। खुशकिस्मतीसे मेरी जरूरतें थोड़ी ही थीं। सब काम खुद कर लेनेकी आदत मैंने डाल ली थी, अिसलिअे मुझे दूसरोंसे थोड़ी ही सेवा लेनी पड़ती थी। मेरी अिस स्वावलम्बनकी आदतकी, मेरी अुस समयकी पोशाक आदिकी सफाओीकी, मेरे अुद्यमकी और मेरी नियमितताकी अुन पर गहरी छाप पड़ी और अिनकी वह अितनी तारीफ करने लगे कि मैं घबरा अुठता था।

अुनके पास मुझसे छिपा रखनेकी कोओी बात है यह मुझे न जान पड़ा। जो कोओी बड़ा आदमी अुनसे मिलने आता अुसका परिचय वे मुझे कराते। अुन परिचयोंमें मेरी आंखोंके सामने आज सबसे अधिक डॉक्टर प्रफुल्लचंद्र राय आते हैं। वे गोखलेके मकानके पास ही रहते थे और प्रायः नित्य आते थे।

"ये प्रोफेसर राय हैं, जिन्हें हर महीने आठ सौ रुपये मिलते हैं और जो अपने खर्चके लिअे ४० रुपया रखकर बाकी सब लोक-हितके कामोंमें दे देते हैं। अिन्होंने ब्याह नहीं किया है और न करना चाहते हैं।" अिन शब्दोंमें गोखलेने मुझे अुनका परिचय कराया।

गोखलेकी और प्रोफेसर रायकी बातें सुननेसे मेरी तृप्ति ही न होती थी, क्योंकि अुनकी बातें देशहितसे सबध रखनेवाली होती थी, या कोअी ज्ञानवार्ता होती थी। कुछ बातें दु:खद भी होती, क्योंकि अुनमें नेताओंकी टीका होती थी। अिसके फलस्वरूप जिन्हें मैंने महान योद्धा समझना सीखा था वे मुझे बौने दिखाअी देने लगे।

गोखलेकी कार्य-प्रणालीसे मुझे जितनी प्रसन्नता हुअी अुतनी ही शिक्षा भी मिली। वे अपना अेक क्षण भी बेकार न जाने देते थे। मैंने देखा कि अुनके सारे सबध देशकार्यके लिअे हैं। सारी बातोंका विषय भी देशहित होता था। अुनकी बातोंमें मुझे कही मलिनता, दभ या झूठकी गध न मिली। हिन्दुस्तानकी गरीबी और गुलामी अुन्हें प्रतिक्षण चुभती थी। कितने ही लोग, कितने ही विषयोंमें अुनकी दिलचस्पी पैदा कराने आते। अुन्हें वे अेक ही जवाब देते — "आप यह काम कीजिये, मुझे अपना करने दीजिये। मुझे तो देशकी स्वाधीनता प्राप्त करनी है। वह मिलनेके बाद मुझे और कुछ सूझेगा। फिलहाल तो अिस धधेसे मेरे पास अेक क्षण भी बाकी नही बचता।"

रानडेके प्रति अुनका पूज्य भाव तो बात-बातमें टपकता था। 'रानडे यह कहते थे' यह तो अुनकी बातचीतमें लगभग 'सूत अुवाच' जैसा था। मैं जब वहा था अुसी बीच रानडेकी जयंती (या पुण्यतिथि अब ठीक याद नही रहा) पड़ती थी। अैसा जान पडा जैसे गोखले अुसे सदा मनाया करते हों। अुस समय वहा मेरे सिवा अुनके मित्र प्रोफेसर काथवटे और अेक सब-जज महाशय थे। अिन्हें अुन्होंने जयती मनानेको निमत्रित किया और अुस अवसर पर अुन्होंने हम लोगोंको रानडके अनेक संस्मरण सुनाये। रानडे, तैलंग और माडलिककी तुलना भी की। मुझे याद है कि अुन्होंने तैलगकी भाषाकी प्रशंसा की। माडलिककी ... नाते स्तुति की। अपने मुवक्किलका वे कितना खयाल रखते दृष्टातरूपमें अेक किस्सा सुनाया कि रोजकी ट्रेन छूट ... तरह स्पेशल ट्रेन खुलवाकर वे कचहरी पहुचे थे। ...तोमुखी प्रतिभाका वर्णन करनेके अुपरात अुस कालके

सर्वोपरि बतलाया। रानडे केवल न्यायमूर्ति नहीं थे। वे अितिहासकार थे, अर्थशास्त्री थे, सुधारक थे, जज होते हुअे भी महासभामें दर्शकके रूपमें निडर भावसे अुपस्थित होते थे। अुसी प्रकार अुनकी बुद्धिमत्ता पर लोगोंको अितना विश्वास था कि सभी अुनके निर्णयोंको स्वीकार करते थे। अिन बातोंका वर्णन करते हुअे गोखलेके हर्षकी सीमा न रहती थी।

गोखले घोड़ा-गाड़ी रखते थे। मैंने अुनसे अिसकी शिकायत की। मैं अुनकी कठिनाअियां नहीं समझ सका था। "आप क्या सब जगह ट्राममें नहीं जा सकते? अिससे क्या नेताओंकी प्रतिष्ठा घटती है?"

किंचित् खिन्न होकर अुन्होंने अुत्तर दिया — "तुम भी मुझे नहीं पहचान सके क्या? मुझे बड़ी कौंसिलसे जो मिलता है, वह मैं अपने काममें नहीं लाता। तुम्हें ट्राम पर सफर करते देख मुझे अीर्ष्या होती है। पर मुझसे वह नहीं हो सकता। जितने लोग मुझे पहचानते हैं, अुतने ही जब तुम्हें भी पहचानने लगेंगे तब तुम्हारा भी ट्राममे घूमना असंभव नहीं, तो कठिन अवश्य हो जायगा। नेता जो कुछ करते हैं मौज-शौकके लिअे ही करते हैं, यह माननेका कोअी कारण नहीं है। तुम्हारी सादगी मुझे पसंद है। मैं, जहां तक हो सकता है, सादगीसे रहता भी हूं; पर अितना अवश्य समझो कि कुछ खर्च मुझ-जैसोंके लिअे अनिवार्य है।"

यों मेरी अेक शिकायत तो सही तौर पर रद्द हो गअी, पर मुझे अेक शिकायत और करनी थी जिसका समाधानकारक अुत्तर वे न दे सके।

मैंने कहा — "पर आप काफी टहलते भी तो नहीं, फिर आप बीमार रहें तो अिसमें अचरज क्या? क्या देशके कामसे व्यायामके लिअे भी अवकाश नहीं मिल सकता?"

जवाब मिला — "मुझे किस समय तुम खाली देखते हो कि जब घूमने जा सकूं?"

मेरे मनमें गोखलेके प्रति अितना आदर था कि मैं अुन्हें प्रत्युत्तर नहीं देता था। अुपर्युक्त अुत्तरसे मेरा समाधान न हुआ, फिर भी

मैं चुप रहा। मैं मानता आया हूं और आज भी मानता हूं कि कितना ही काम होने पर भी जैसे हम खानेका समय निकालते हैं वैसे ही व्यायामका समय भी हमें निकालना चाहिये। मेरी नम्र सम्मतिमें जिससे देशकी सेवा कम नहीं, बल्कि कुछ अधिक ही होती है।

आत्मकथा, पृ० २९०–९४

गोखलेकी छत्रछायामें रहनेसे बंगालमें मेरा काम बहुत आसान हो गया। बंगालके अग्रगण्य कुटुंबोंकी जानकारी मुझे सहज ही हो गअी और बंगालसे मेरा निकट संबंध जुड़ गया।

ब्रह्मदेशसे लौटकर मैंने गोखलेसे विदा ली। अुनका वियोग मुझे खला, पर मेरा बंगालका या वास्तवमें कलकत्तेका काम पूरा हो चुका था।

धंधेमें लगनेके पहले मेरा विचार था कि हिन्दुस्तानकी अेक छोटी-सी यात्रा तीसरे दरजेमें करके अुस दरजेके यात्रियोंका परिचय प्राप्त करूं और अुनके कष्ट जान लूं। गोखलेके सामने मैंने यह विचार रखा। पहले तो अुन्होंने हंसकर टाल दिया, पर जब मैंने अिस यात्राके विषयमें अपनी आशाओंका वर्णन किया, तब अुन्होंने प्रसन्नतापूर्वक मेरी योजनाको स्वीकृति दे दी। मुझे पहले तो काशीजी जाना था और वहां विदुषी अेनी बेसेंटके दर्शन करने थे। वे अुस समय बीमार थीं।

अिस यात्राके लिअे मुझे नया साज-सामान जुटाना था। पीतलका अेक डिब्बा गोखलेने ही दिया और अुसमें मेरे लिअे मगदके लड्डू और पूरियां रखवा दीं। बारह आनेमें किरमिचका अेक बैग (थैला) लिया। छाया (पोरबंदरके पासके अेक गांव) की अूनका लबादा बनवाया। बैगमें यह लबादा, तौलिया, कुरता और धोती थी। ओढ़नेको अेक कंबल था। अिनके अतिरिक्त अेक लोटा भी साथ रख लिया। अितना सामान लेकर मैं निकला।

गोखले और डॉ० राय स्टेशन पर मुझे पहुंचाने आये। दोनोंसे मैंने कष्ट न करनेकी *प्रार्थना की। पर दोनोंने आनेका आग्रह किया।*

गोखले बोले — "तुम पहले दर्जेमें आते तो शायद मैं न आता, पर अब तो मुझे आना ही है।"

प्लेटफार्म पर आते हुओ गोखलेको तो किसीने न रोका। अुन्होंने अपनी रेशमी पगड़ी बांधी थी और धोती तथा कोट पहने हुओ थे। डॉ० राय बंगाली पहनावेमें थे, अिसलिओ अुन्हें टिकटबाबूने पहले तो अंदर जानेसे रोका, पर जब गोखलेने कहा — "मेरे मित्र हैं," तब वह भी दाखिल हुओ। अिस तरह दोनोंने मुझे विदा दी।

आत्मकथा, पृ० २९९–३००

३. गोखलेका दक्षिण अफ्रीकामें आगमन

मैं अरसेसे गोखले और दूसरे नेताओंसे प्रार्थना करता आ रहा था कि दक्षिण अफ्रीका आकर भारतीयोंकी स्थितिको देखें। पर कोओी आयेंगे या नहीं अिस विषयमें मुझे पूरा संदेह था। मि० रिच किसी भी नेताको भेजनेकी कोशिश कर रहे थे; पर जब लड़ाओी बिलकुल ही मंद पड़ गओी हो वैसे वक्तमें आनेकी हिम्मत कौन करता? १९११ में गोखले विलायतमें थे। अुन्होंने दक्षिण अफ्रीकाके संग्रामका अध्ययन तो किया ही था। बड़ी कौंसिलमें बहस भी की थी और गिरमिटियोंका नेटाल भेजना बंद कर देनेका प्रस्ताव भी पेश किया था (२५ फरवरी, १९१०) जो पास हुआ था। अुनके साथ मेरा पत्र-व्यवहार बराबर चल ही रहा था। भारत-मंत्रीके साथ वे मशविरा भी कर रहे थे और अुन्हें यह जता दिया गया था कि वे दक्षिण अफ्रीका जाकर पूरे मसलेको समझना चाहते हैं। भारत-मंत्रीने अुनके अिरादेको पसंद किया था। गोखलेने मुझे छह हफ्तेके दौरेकी योजना बनानेको लिख भेजा और दक्षिण अफ्रीकासे विदा होनेकी आखिरी तारीख भी लिख दी। हमारे हर्षका तो पार ही न रहा। किसी भी भारतीय नेताने अब तक दक्षिण अफ्रीकाकी यात्रा नहीं की थी। दक्षिण अफ्रीकाकी बात तो क्या, हिन्दुस्तानके बाहरके अेक भी देश या अुपनिवेशमें प्रवासी भारतीयोंकी हालत समझनेके अुद्देश्यसे कोओी नहीं गया था। अिससे हम सभी गोखले-जैसे महान नेताके

आगमनके महत्वको समझ सके और हमने निश्चय किया कि अुनका अैसा स्वागत-सम्मान किया जाय जैसा कभी किसी बादशाहका भी न हुआ हो।' दक्षिण अफ्रीकाके मुख्य-मुख्य नगरोंमें अुनको ले जानेकी बात भी तय की गअी। सत्याग्रही और दूसरे हिन्दुस्तानी स्वागतकी तैयारीमें खुशीसे शरीक हुअे। अिस स्वागतमें शामिल होनेके लिअे गोरोंको भी निमत्रण दिया गया और लगभग सभी जगह वे अुसमें सम्मिलित हुअे। हमने यह भी तय किया कि जहा-जहां सार्वजनिक सभा की जाय वहां-वहा अुस नगरका मेयर स्वीकार करे तो आम तौरसे अुसीको सभापतिके आसन पर बिठाया जाय और जहां-जहा मिल सके वहा-वहा टाअुनहालमें ही सभा की जाय। रेलवे-विभागकी अिजाजत लेकर रास्तेके बडे बडे स्टेशनोंको सजानेका भार भी अपने अूपर लिया और अधिकांश स्टेशनोंके सजानेकी अिजाजत भी हासिल कर ली। आम तौरसे अैसी अिजाजत नहीं दी जाती। स्वागतकी हमारी जबरदस्त तयारीका असर अधिकारियों पर हुआ और अुससे जितनी हमदर्दी वे दिखा सके अुतनी अुन्होंने दिखाअी। मिसालके लिअे, जोहानिसबर्गमें वहाके स्टेशनको सजानेमें ही हमें कोअी १५ दिन लग गये होंगे, क्योंकि वहा हमने अेक सुन्दर चित्रित तोरण बनाया था, जिसका नकशा मि० केलनबेकने तैयार किया था।

दक्षिण अफ्रीका कैसा देश है, जिसका अदाजा गोखलेको विलायतमें ही हो गया था। भारत-मत्रीने दक्षिण अफ्रीकाकी सरकारको गोखलेके रुतबे, साम्राज्यमें अुनके स्थान अित्यादिकी सूचना दे दी थी, पर स्टीमर कपनीसे टिकट ले रखने या अच्छा केबिन (कमरा) रिजर्व करा रखनेकी बात किसीको कैसे सूझ सकती थी? गोखलेकी तबीयत नाजुक तो रहती ही थी। अतः अुन्हें जहाज पर अच्छा केबिन चाहिये था। अेकान्त भी जरूरी था। स्टीमर कपनीके यहासे दो टूक जवाब मिला कि अैसा केबिन हमारे यहा है ही नहीं। मुझे ठीक याद नहीं कि गोखलेने खुद या अुनके किसी मित्रने अिडिया आफिस (भारत-मत्रीके दफ्तर)को अिसकी खबर दी। कपनीके डायरेक्टरको अिडिया आफिसकी ओरसे पत्र लिखा गया और जहां कोअी था ही

मानपत्र वहींकी खानसे निकले हुअे सोनेकी हृदयाकार तख्ती पर खुदा हुआ था, जो दक्षिण अफ्रीकाकी बढ़िया लकड़ी (रोडेशियाकी टीक) पर जड़ी हुअी थी। अिस लकड़ी पर ताजमहल और हिन्दुस्तानके कुछ दृश्योंके चित्र बड़ी खूबसूरतीसे खोदे गये थे। गोखलेका सबके साथ परिचय कराना, मानपत्र पढ़ना, अुसका जवाब देना, दूसरे मानपत्र स्वीकार करना, ये सारे काम २० मिनटके अंदर ही निबटा दिये गये। मानपत्र अितना छोटा था कि अुसे पढ़नेमें पांच मिनटसे अधिक नहीं लगे होंगे। गोखलेके अुत्तरने भी अिससे ज्यादा वक्त नहीं लिया होगा। स्वयंसेवकोंका प्रबंध अितना सुंदर था कि पूर्व-निश्चित लोगोंसे अधिक अेक भी आदमी प्लेटफार्म पर नहीं आने पाया। शोरगुल बिलकुल नहीं था। बाहर जबरदस्त भीड़ थी, फिर भी किसीके आने-जानेमें तनिक भी अड़चन नहीं हुअी।

गोखलेको ठहरानेका प्रबंध, मि० केलनबेकके अेक सुंदर बंगलेमें किया गया था, जो जोहानिसबर्गसे पांच मीलके फासले पर अवस्थित अेक पहाड़ीकी चोटी पर बना हुआ था। वहांका दृश्य अितना सुंदर था, शांति अितनी आनंददायक थी और बंगलेकी बनावट सादी होते हुअे भी अितनी कलामय थी कि गोखलेको वह स्थान बहुत ही पसंद आया। सब लोगोंसे मिलनेका प्रबंध शहरमें किया गया था। अिसके लिअे अेक खास दफ्तर किराये पर लिया गया था। अुसमें तीन कमरे थे: अेक खास कमरा गोखलेके आराम करनेके लिअे, दूसरा मुलाकातके लिअे और तीसरा मिलने आनेवालोंके बैठनेके लिअे। नगरके कुछ विशेष व्यक्तियोंसे निजी मुलाकातके लिअे भी हम गोखलेको ले गये थे। प्रमुख यूरोपियनोंने भी अपनी अेक निजी सभा की थी, जिसमें अुनके दृष्टिबिंदुको गोखले पूरी तरह समझ लें। अिसके सिवा जोहानिसबर्गमें अुनके सम्मानमें अेक बड़ा भोज भी दिया गया, जिसमें ४०० आदमियोंको निमंत्रण दिया गया था। अिनमें १५० के लगभग यूरोपियन होंगे। दक्षिण अफ्रीकाके यूरोपियनोंके लिअे यह बिलकुल नया अचरजभरा अनुभव था। अितने अधिक हिन्दुस्तानियोंके साथ अेक पांतमें भोजन करने बैठना, निरामिष

भोजन और बिना शराबके काम चला लेना, तीनों अनुभव अुनमें से बहुतोंके लिअे नये थे। दो तो सभीके लिअे नये थे।

अिस सम्मेलनमें गोखलेने जो भाषण दिया वह दक्षिण अफ्रीकामें अुनका सबसे बड़ा और सबसे अधिक महत्त्वका भाषण था। वह लगातार ४५ मिनट बोले। अिस भाषणकी तैयारीमें अुन्होंने हमारी पूरी हाजिरी ली थी। अुन्होंने अपना यह जिन्दगीभरका नियम बताया कि स्थानीय लोगोंके दृष्टिबिंदुकी अवगणना न हो और अुसका जितना लिहाज किया जा सकता है अुतना किया जाय। अिसलिअे मुझे यह बता देनेको कहा कि मैं अपनी दृष्टिसे अुनसे क्या कहलवाना चाहता हूं। यह मुझे लिखकर देना था और अिसके साथ यह शर्त थी कि अगर मेरे अेक वाक्य या विचारका भी वे अुपयोग न करें तो मैं बुरा न मानूं। वह मजमून न ज्यादा लंबा हो न छोटा, फिर भी कोअी जरूरी बात छूट न जाय। अिन सारी शर्तोंका पालन करते हुअे मुझे अुनके लिअे अपने नोट तैयार करने होते थे। यह तो कह ही दूं कि मेरी भाषाका तो अुन्होंने बिलकुल ही अुपयोग नहीं किया। अंग्रेजी भाषामें पारंगत गोखले मेरी भाषाका कहीं भी अुपयोग करेंगे, यह आशा मैं रखता ही क्यों? मेरे विचारोंका अुन्होंने अुपयोग किया, यह भी मैं नहीं कह सकता। पर अुन्होंने मेरे विचारोंकी अुपयोगिता स्वीकार की। अिससे मैंने मनको यह समझा लिया कि अुन्होंने किसी तरह मेरे विचारोंका अुपयोग कर लिया होगा। पर अुनकी विचारश्रेणी अैसी थी कि अुन्होंने अुसमें हमारे विचारको कहीं स्थान दिया या नहीं, अिसका पता आपको चल ही नहीं सकता था। गोखलेके सभी भाषणोंमें मैं अुपस्थित था, पर मुझे अेक भी अैसा अवसर याद नहीं आता जब मैंने सोचा हो कि अुन्होंने अमुक भाव प्रकट नहीं किया होता या अमुक विशेषणका व्यवहार न किया होता तो अच्छा होता। अुनके विचारोंकी स्पष्टता, दृढ़ता, विनय अित्यादि अुनके अतिशय परिश्रम और सत्यपरायणताका प्रसाद थे।

जोहानिसबर्गमें केवल हिन्दुस्तानियोंकी विराट सभा भी होनी ही चाहिये थी। मेरा यह आग्रह पूर्वकालसे ही चला आ रहा है कि

"तुम अपनी टेक जरूर रखना। यहा तुम्हारे पाले पडा हू। अिसलिअे छुटकारा थोडे ही पा सकता हू।" यों कहकर गोखलेने मुझे रिझाया और अिसके बाद अैसी सभाओंमें ठेठ जजीबार तक मराठीमें ही बोले और मैं अुनका विशेष रूपसे नियुक्त भाषान्तरकार रहा। मैं नही जानता कि यह बात मैं अुन्हे कहा तक समझा सका कि मुहावरेदार और व्याकरण-शुद्ध अग्रेजीमें बोलनेकी अपेक्षा यथासभव मातृभाषा, यहा तक कि टूटी-फूटी व्याकरण-रहित हिन्दुस्तानीमें ही बोलना मुनासिब है। पर अितना जानता हू कि दक्षिण अफ्रीकामें वे महज मुझे खुश करनेके खातिर मराठीमें बोले। मराठीमें कुछ भाषण देनेके बाद अिसके फलसे अुन्हें भी प्रसन्नता हुअी, यह मैं देख सका। गोखलेने दक्षिण अफ्रीकामें अनेक अवसरो पर अपने व्यवहारसे यह दिखा दिया कि जहां सिद्धातका प्रश्न नही वहा अपने सेवकोंको प्रसन्न करना अेक गुण है।

दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास, पृ० ३३०–३८

४. गोखलेकी टॉल्सटॉय फार्मकी मुलाकात

फार्म जब चल रहा था अुसी बीच गोखले दक्षिण अफ्रीका आये थे। फार्ममें खाट जैसी कोअी चीज नही थी, पर गोखलेके लिअे अेक माग लाये। कोअी अैसा कमरा नही था जहा अुनको पूरा अेकात मिले। बैठनेके लिअे पाठशालाकी बेंचें भर थीं। अैसी स्थितिमें भी नाजुक तबीयतवाले गोखलेको फार्म पर लाये बिना हमसे कैसे रहा जाता? वैसे वह भी अुसे देखे बिना कैसे रह सकते थे? मेरा खयाल था कि अुनका शरीर अेक रातकी तकलीफ बर्दाश्त कर लेगा और वे स्टेशनसे फार्म तक डेढ मील पैदल भी आ सकते हैं। मैंने अुनसे पूछ लिया था और अपनी सरलतावश अुन्होंने बिना सोचे-समझे मुझ पर विश्वास रखकर सारी व्यवस्था स्वीकार कर ली थी। सयोगवश अुसी दिन वर्षा भी हो गअी। यकायक मेरे किये प्रबधमें कोअी हेरफेर नही हो सकता था। अिस अज्ञानभरे प्रेमके कारण अुस दिन मैंने गोखलेको जो कष्ट दिया वह मुझे कभी नहीं

अगले दिन सवेरे न अुन्होंने खुद आराम लिया, न हमें लेने दिया। अुनके सब भाषणोंको, जिन्हें हम पुस्तकरूपमें छपाने जा रहे थे, सुधारा। अुनकी आदत थी कि कुछ भी लिखना हो तो अुसका मज़मून अिधर-से-अुधर टहलते हुअे सोचते थे। अुन्हें अेक छोटा-सा पत्र लिखना था। मैंने सोचा कि अुसे तो वे तुरत लिख डालेंगे; पर अुन्होंने अैसा नहीं किया। मैंने टीका की तो मुझे यह व्याख्यान सुनना पड़ा — "मेरा जीवन तुम क्या जानो? मैं छोटी-से-छोटी बात भी अुतावलीमें नहीं करता। अुसको सोचता हूं। अुसके मध्यबिंदुको सोचता हूं। फिर विषयके अनुरूप भाषाका विचार करता हूं और तब लिखता हूं। सब अैसा करें तो कितना वक्त बच जाय? और समाज भी आज जो अधकचरे विचार अुसे मिल रहे हैं अुनके भारसे बच जाय।"

दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास, पृ० ३१६-१८

५. गोखलेका प्रमाणपत्र

गोखलेके पास स्व० महादेव गोविंद रानडेका प्रसादस्वरूप अेक दुपट्टा था। अिस दुपट्टेको वे बड़े ही जतनसे रखते थे और विशेष अवसरों पर ही काममें लाते थे। जोहानिसबर्गमें अुनके सम्मानमें जो भोज दिया गया था, वह सम्मेलनका महत्वपूर्ण अवसर था। दक्षिण अफ्रीकामें यह अुनका बड़े-से-बड़ा भाषण था। अतः अुस अवसर पर अुन्हें अुस दुपट्टेका अुपयोग करना था। अुसमें शिकन पड़ी हुअी थी और अुस पर अिस्त्री करनेकी आवश्यकता थी। धोबीको बुलाकर तुरत अिस्त्री करा देना संभव न था। मैंने अपनी कलाका अुपयोग करनेकी अिजाजत मांगी।

"तुम्हारी वकालतका तो मैं विश्वास कर लूंगा, पर अिस दुपट्टे पर अपनी धोबीगिरी दिखानेकी अिजाजत मैं तुम्हें नहीं दे सकता। अिस दुपट्टे पर तुमने दाग लगा दिया तो? अिसकी कीमत तुम जानते हो?" यह कहकर बड़े अुल्लाससे अुस प्रसादकी कथा मुझे सुनाअी।

मैंने फिर प्रार्थना की और दाग न पड़नेकी जिम्मेदारी ली। मुझे अिसकी करनेकी अनुमति मिली; मुझे अपनी कुशलताका सर्टीफिकेट मिल गया! अब दुनिया मुझे सर्टीफिकेट न दे तो क्या होता है?

आत्मकथा, पृ० २६६-६७

६. गोखलेकी दक्षिण अफ्रीकाकी यात्रा आगे बढ़ी

जोहानिसबर्गसे हमें प्रिटोरिया जाना था। प्रिटोरियामें गोखलेको यूनियन सरकारकी ओरसे निमंत्रण था। अतः ट्रांसवाल होटलमें अुसने अुनके लिअे जो स्थान खाली रखवाया था वहीं अुतरना था। यहां गोखलेको यूनियन सरकारके मंत्रि-मंडलसे मिलना था, जिसमें जनरल बोथा और जनरल स्मट्स भी थे। जैसा कि अूपर बता चुका हूं, अुनका कार्यक्रम मैंने अैसा बनाया था कि रोज करनेके कामोंकी सूचना मैं अुन्हें सवेरे या वे पूछें तो अगली रातको दे दिया करता था। मंत्रि-मंडलसे मिलनेका काम बड़ी जवाबदेहीका था। हम दोनोंने तय किया कि मैं अुनके साथ न जाअूं, जानेकी अिच्छा भी प्रकट न करूं। मेरी अुपस्थितिसे मंत्रि-मंडल और गोखलेके बीच कुछ-न-कुछ पर्दा पड़ जाता। मंत्रिगण जी-भरकर स्थानीय भारतीयोंकी और अिच्छा हो तो मेरी भी जो गलतियां मानते हों अुन्हें न बता सकते। वे कुछ कहना चाहते हों तो अुसे भी खुले दिलसे न कह पाते। पर अिससे गोखलेकी जिम्मेदारी दुगुनी हो जाती थी। कोअी तथ्यकी भूल हो जाय या वे कोअी नया तथ्य सामने रखें और अुसका जवाब गोखलेके पास न हो अथवा अुन्हें हिंदुस्तानियोंकी ओरसे कोअी स्वीकृति देनी हो तो अुस दशामें क्या करना होगा, यह समस्या अुपस्थित हो गअी। पर गोखलेने तुरंत अुसका हल निकाल लिया। मैं अुनके लिअे भारतीयोंकी स्थितिका अथसे अिति तकका खुलासा तैयार कर दूं। भारतीय कहां तक जानेको तैयार हैं यह भी लिख दूं। अुसके बाहरकी कोअी भी बात सामने आये तो गोखले अपना अज्ञान स्वीकार कर लें। यह निश्चय करके वे निश्चिंत हो गये। अब करना अितना ही

रहा कि मैं अुस तरहका खुलासा तैयार कर दूं और गोखले अुसे पढ़ लें। पर वे अुसे पढ़ लें अितना वक्त तो मैंने रखा ही नहीं था। कितना ही छोटा खुलासा लिखूं, फिर भी चार अुपनिवेशोंमें भारतीयोंकी स्थितिका अितिहास दस-बीस पन्ने लिखे बिना कैसे दे सकता था! फिर अुस खुलासेको पढ़नेके बाद अुनके मनमें कुछ सवाल तो अुठते ही। पर अुनकी स्मरणशक्ति जितनी तीव्र थी अुतनी ही श्रम करनेकी शक्ति अगाध थी। सारी रात वे जगे और पोलाकको और मुझे जगाया। अेक-अेक बातकी पूरी जानकारी प्राप्त की और अुन्होंने भी समझा या नहीं अिसकी जांच भी करा ली। अपने विचार मुझे सुनाते जाते थे। अंतमें अुन्हें संतोष हुआ। मैं तो निर्भय था ही।

लगभग दो घंटे या अिससे कुछ अधिक वे मंत्रि-मंडलके पास बैठे और लौटकर मुझसे कहा — "तुम्हें अेक बरसके अंदर हिन्दुस्तान लौट आना है। सब बातोंका फैसला हो गया। काला कानून रद्द होगा। अिमिग्रेशन कानूनसे वर्णभेद निकाल दिया जायगा। तीन पौंडका कर अुठा दिया जायगा।" मैंने कहा, "मुझे अिसमें पूरी शंका है। मंत्रि-मंडलको जितना मैं जानता हूं अुतना आप नहीं जानते। आपका आशावाद मुझे प्रिय है, क्योंकि मैं खुद भी आशावादी हूं, पर अनेक बार धोखा खा चुका हूं। अिसलिअे अिस विषयमें आपके जितनी आशा मैं नहीं रख सकता। पर मुझे कोअी डर नहीं। आप मंत्रि-मंडलसे वचन ले आये, अितना ही मेरे लिअे काफी है। मेरा धर्म तो अितना ही है कि जब आवश्यक हो तब लड़ लूं और यह साबित कर दूं कि हमारी लड़ाअी न्यायकी है। अिसकी सिद्धिमें आपको मिला हुआ वचन हमारे लिअे बहुत लाभजनक होगा और लड़ना ही पड़ा तो लड़नेमें अुससे हमारा बल दूना हो जायगा। पर अधिक भारतीयोंके जेलमें गये बिना और अेक सालके अंदर मैं हिन्दुस्तान लौट सकता हूं, अैसा मुझे नहीं दिखाअी देता।"

यह सुनकर वे बोले — "मैं तुमसे जो कहता हूं, अुसमें फर्क पड़नेवाला नहीं। मुझे जनरल बोथाने वचन दिया है कि काला कानून रद्द कर दिया जायगा और तीन पौंडका कर अुठा दिया जायगा।

स्टीमर पर हमें अितमीनानसे बातें करनेकी फुरसत तो रहती ही। अिन वार्तालापोंमें अुन्होंने मुझे हिन्दुस्तानके लिअे तैयार किया। भारतके हरअेक नेताके चरित्रका विश्लेषण करके दिखाया। अुनका विश्लेषण अितना सही था कि अुन नेताओंके विषयमें जो कुछ मैंने स्वयं अनुभव किया अुसमें और गोखलेके आलेखनमें शायद ही फर्क पाया हो।

गोखलेकी दक्षिण अफ्रीकाकी यात्रामें अुनके साथ मेरा जो संबंध रहा, अुनके कितने ही पवित्र संस्मरण असे हैं जो यहां दिये जा सकते हैं; पर सत्याग्रहके अितिहासके साथ अुनका संबंध नहीं है अिससे मुझे अनिच्छापूर्वक अपनी कलम रोकनी पड़ रही है। जंजीबारमें हुआ वियोग

मेरे और मि० केलनबेक दोनोंके लिअे अतिशय दुःखदायी था। पर यह सोचकर कि देहधारियोंके निकट-से-निकट सबधका भी अेक दिन अत होता ही है, हमने धैर्य धारण किया और दोनोंने यह आशा रखी कि गोखलेकी भविष्यवाणी सत्य होगी और हम दोनों अेक बरसके अदर हिन्दुस्तान जा सकेंगे। पर यह अनहोनी बात निकली।

फिर भी गोखलेकी दक्षिण अफ्रीकाकी यात्राने हमें अपने निश्चयमें अधिक दृढ़ किया और कुछ दिन बाद जब युद्ध फिर अधिक तीव्र रूपमें आरभ हुआ तब अिस यात्राका मर्म और अुसकी आवश्यकता हम अधिक समझ सके। गोखले दक्षिण अफ्रीका न गये होते और मत्रि-मडलसे न मिले होते, तो तीन पौंडके करको हम युद्धका विषय न बना सके होते। अगर काला कानून रद्द हो जाने पर सत्याग्रहकी लडाअी बद हो जाती, तो तीन पौंडके करके लिअे हमें नया सत्याग्रह करना पड़ता और अुसे करनेमें अपार कष्ट सहन करना पडता। अितना ही नही, लोग तुरंत दूसरे सत्याग्रहके लिअे तैयार होते या नही, अिसमें भी शका ही थी। अिस करको रद्द कराना स्वतत्र भारतीयोंका फर्ज था। अिसके लिअे अर्जियां भेजना आदि सब वैध अुपाय किये जा चुके थे। १८९५ से यह कर अदा किया जा रहा था। पर कैसा ही घोर कष्ट क्यों न हो, यह लबे अरसे तक बना रहे तो लोग अुसके आदी हो जाते हैं और अुसका विरोध करनेका धर्म अुन्हें समझाना कठिन हो जाता है। दुनियाको अुसकी घोरता समझाना भी अुतना ही कठिन हो जाता है। गोखलेको मिले हुअे वचनने सत्याग्रहियोंका रास्ता साफ कर दिया। या तो सरकार अपने वचनके अनुसार अुक्त करको अुठा दे, नही तो यह वचन-भंग ही लडाअीका सबल कारण हो जाता। हुआ भी अैसा ही। सरकारने अेक बरसके अदर कर नहीं अुठाया। अितना ही नही, साफ कह दिया कि वह हटाया नही जा सकता।

अतः गोखलेकी यात्रासे तीन पौंडके करको सत्याग्रहके जरिये हटवानेमें हमें मदद तो मिली ही, अिस यात्रासे वे दक्षिण अफ्रीकाके प्रश्नके विशेषज्ञ मान लिये गये। दक्षिण अफ्रीकाके बारेमें अब अुनके कथनका वजन भी बढ़ गया। साथ ही दक्षिण अफ्रीकामें बसनेवाले

भारतीयोंके विषयमें सीधी जानकारी हो जानेके कारण वे अिस बातको अधिक समझने लगे कि हिन्दुस्तानको अुनके लिअे क्या करना चाहिये और हिन्दुस्तानको यह बात समझानेमें अुनकी शक्ति तथा अधिकार बहुत बढ़ गया। हमारी लड़ाअी जब फिर छिड़ी तो हिन्दुस्तानसे पैसेकी वर्षा होने लगी और लॉर्ड हार्डिंजने सत्याग्रहियोंके साथ अपनी गहरी और ज्वलन्त सहानुभूति दरसाकर अुन्हें प्रोत्साहन दिया। हिन्दुस्तानसे मि० अेंड्रूज और मि० पियर्सन दक्षिण अफ्रीका गये। गोखलेकी यात्राके बिना ये सभी बातें असंभव होतीं।

दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास, पृ० ३३९–४३

७. सत्याग्रहकी दृढ़ प्रतिज्ञा

गोखलेने जब सुना कि हम नअी कूच करनेवाले हैं तब अुन्होंने लंबा तार भेजा। अुसमें लिखा कि अैसा करनेसे लॉर्ड हार्डिजकी और अुनकी अपनी स्थिति कठिन हो जायगी और दूसरी कूच मुलतवी रखने और कमीशनके सामने अिजहार देनेकी जोरदार सलाह दी।

हमारे अूपर धर्मसंकट आ पड़ा। कमीशनके सदस्योंमें और आदमी नहीं लिये गये तो भारतीय जनता अुसका बहिष्कार करनेकी प्रतिज्ञा कर चुकी थी। लॉर्ड हार्डिज नाराज हों, गोखले दुःखी हों, तो भी प्रतिज्ञा कैसे तोड़ी जाय? मि० अेंड्रूजने गोखलेकी भावना, अुनके नाजुक स्वास्थ्य और हमारे निश्चयसे अुनके दिलको लगनेवाले धक्के पर विचार करनेकी सलाह दी। मैं तो जानता ही था। नेताओंने अिकट्ठे होकर स्थिति पर विचार किया और अंतमें निश्चय किया कि चाहे जो जोखिम अुठानी पड़े, पर बहिष्कार तो कायम रहना ही चाहिये। अिसलिअे हमने गोखलेको लगभग सौ पौंड खर्च करके लंबा तार भेजा। अुससे अेंड्रूज भी सहमत हुअे। अुसका आशय यह था :

“आपका दुःख मैं समझता हूं। मैं सदा ही चाहूंगा कि बड़ी-से-बड़ी वस्तुका त्याग करके भी आपकी सलाहका अनुसरण करूं। लॉर्ड हार्डिजने हमारी जो सहायता की है वह अमूल्य है। मैं यह भी चाहता हूं कि यह मदद हमें अंत तक मिलती रहे। पर मैं चाहता हूं कि

आप हमारी स्थितिको समझें। जिसमें हजारों आदमियोंकी प्रतिज्ञाका प्रश्न आता है। प्रतिज्ञा शुद्ध है। *हमारी सारी लड़ाओीकी अिमारत* प्रतिज्ञाओंकी नींव पर खड़ी की गओी है। प्रतिज्ञाओंका बंधन नहीं होता तो हममें से बहुतेरे आज गिर गये होते। हजारोंकी प्रतिज्ञा पर अेक बार पानी फिर जाय, तो नैतिक बंधन जैसी कोओी चीज रहेगी ही नहीं। प्रतिज्ञा करते समय लोगोंने पूरी तरह विचार कर लिया था। *अुसमें कोओी अनीति तो है ही नहीं।* बहिष्कारकी *प्रतिज्ञा करनेका* कौमको अधिकार है। मैं चाहता हूं कि आप भी हमें सलाह दें कि अैसी प्रतिज्ञा किसीकी खातिर भी नहीं तोड़ी जानी चाहिये और हर तरहकी हानिकी जोखिम अुठाकर भी अुसका पालन होना चाहिये। यह तार आप लॉर्ड हार्डिजको दिखाअियेगा। मैं चाहता हूं कि आपकी स्थिति कठिन न हो जाय। हमने अपनी लड़ाओी अीश्वरको साक्षी और अुसकी सहायताका भरोसा रखकर शुरू की है। बड़ोंकी और बड़े आदमियोंकी सहायता हम चाहते और मांगते हैं। वह मिल जाय तो प्रसन्न होते हैं। पर मेरी नम्र राय है कि वह मिले या न मिले, प्रतिज्ञाका बंधन कदापि न टूटना चाहिये। अुसके पालनमें आपका मैं समर्थन और आशीर्वाद चाहता हूं।"

यह तार गोखलेको मिला। अिसका असर अुनके स्वास्थ्य पर तो हुआ, पर अुनकी सहायता पर नहीं हुआ या हुआ तो यही कि अुसका जोर और बढ़ गया। लॉर्ड हार्डिजको अुन्होंने तार भेजा; पर हमारा त्याग नहीं किया। अुलटे हमारी दृष्टिका बचाव किया। लॉर्ड हार्डिज भी दृढ़ रहे।

दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास, पृ० ४०३-०४

८. गोखलेके साथ लन्दनमें

१९१४ में सत्याग्रहकी लड़ाओीका अन्त हो जाने पर मुझे गोखलेका यह आदेश मिला कि मैं लन्दन होकर भारत लौट जाअूं। अिसलिअे जुलाओी मासमें कस्तूरबा, केलनबेक और मैं [illegible] लिअे रवाना हुअे।

विलायतमें मुझे पसलीका वरम होनेकी बात मैं लिख चुका हूं। अिस रोगके समय गोखले विलायत आ चुके थे। अुनके पास मैं और केलनवेक हमेशा जाया करते थे। वहुत करके लड़ाअीकी ही चर्चा होती। मेरी बीमारी भी चर्चाका अेक विषय बन गअी। मेरे खुराकके प्रयोग तो चल ही रहे थे। अुस वक्तकी मेरी खुराक मूंगफली, कच्चे और पके केले, जैतूनका तेल, टमाटर और अंगूर वगैरा थी। दूध, अनाज, दाल आदि बिलकुल न लेता था। मेरी तीमारदारी डॉ० जीवराज मेहता करते थे। अुन्होंने दूध पीने और अनाज खानेका जबरदस्त आग्रह किया। शिकायत गोखले तक पहुंची। फलाहारके पक्षमें मेरी दलीलके लिअे अुनके मनमें कुछ आदर न था। वे अिस बात पर जोर देते थे कि आरोग्यकी रक्षाके लिअे डॉक्टर जो कहे वह लेना चाहिये।

गोखलेके आग्रहको टालना मेरे लिअे कठिन बात थी। अुन्होंने जब बहुत जोर दिया तब मैंने सोचनेके लिअे चौबीस घंटेकी मुहलत मांगी। मैं और केलनबेक घर आये। रास्तेमें मेरा कर्तव्य क्या है, अिस विषयमें अुनसे चर्चा की। मेरे प्रयोगमें वे साथी थे। अुन्हें यह प्रयोग भाता भी था, पर मुझे अुनका रुख यह दिखाअी दिया कि अपने स्वास्थ्यके खातिर मैं अुसे छोड़ दूं तो अच्छा है। अुनकी यह वृत्ति मैंने समझ ली; अब अपने अंतर्नादको सुनना-समझना था।

सारी रात मैंने विचारमें बिताअी। यदि सारा प्रयोग छोड़ दूं तो मेरे किये हुअे समस्त विचार धूलमें मिले जा रहे थे। अुन विचारोंमें मुझे कहीं भूल न दिखाअी देती थी। अब सवाल यह था कि कहां तक गोखलेके प्रेमके अधीन होना धर्म है अथवा शरीर-रक्षाके लिअे अैसे प्रयोगोंका कहां तक त्याग मेरा कर्तव्य है। अिससे मैंने निश्चय किया कि अिन प्रयोगोंमें से जो प्रयोग केवल धर्मकी दृष्टिसे किया जा रहा हो, अुस पर तो डटे रहना और बाकी सब बातोंमें डॉक्टरकी आज्ञाका पालन करना चाहिये। दूधके त्यागमें धर्मभावना मुख्य थी। कलकत्तेमें गाय-भैंसों पर फूंकेके जो जुल्म होते थे, वे मेरे सामने नाच रहे थे। जैसे मांस वैसे जानवरका दूध भी मनुष्यकी खुराक नहीं है, यह

बात भी मेरे सामने थी। असिसे दूधके त्याग पर दृढ रहनेका निश्चय करके मैं सबेरे अुठा। अितने निश्चयसे मेरा मन बहुत हलका हो गया। गोखलेका डर था, पर यह विश्वास था कि वे मेरे निश्चयका आदर करेंगे।

शामको नेशनल लिबरल क्लबमें मैं और केलनबेक अुनसे मिलने गये। अुन्होंने तुरत सवाल किया — "क्यों डॉक्टरका कहना माननेका निश्चय कर लिया?"

मैंने धीरेसे किन्तु दृढतासे जवाब दिया — "मैं सब करूंगा, पर अेक बातका आग्रह आप न करें। दूध और दूधकी बनी हुअी चीज अथवा मांस मैं नहीं लूंगा। मेरा मन कहता है कि अुन्हें न लेनेमें शरीर चला जाय तो अुसे जाने देना धर्म है।"

गोखलेने पूछा — "यह तुम्हारा अंतिम निर्णय है?"

मैंने जवाब दिया — "मैं समझता हूं कि मैं दूसरा जवाब नहीं दे सकता। मैं जानता हूं कि आपको असिसे दुःख होगा। पर मुझे क्षमा कीजियेगा।"

गोखलेने कुछ दुःखसे, पर बड़े प्रेमसे कहा — "तुम्हारा निश्चय मुझे पसंद नहीं है। असिमें मैं धर्म नहीं देखता, पर अब मैं आग्रह न करूंगा।" यह कहकर डॉ० जीवराज मेहताकी ओर मुड़कर अुन्होंने कहा — "अब गांधीको तंग न कीजियेगा। वे जो कहते हैं अुसके अंदर रहकर आप जो दे सकते हों दीजियेगा।"

डॉक्टरने नाखुशी जाहिर की, लेकिन लाचार हो गये। मुझे मूंगका पानी लेनेकी सलाह दी। अुसमें हींगका बघार देनेको कहा। मैंने असे मंजूर कर लिया। अेक-दो दिन यह खुराक ली। अुससे मेरी तकलीफ बढ़ी। मुझे वह मुआफिक नहीं आअी। असिसे मैं फिर फलाहार पर आया। डॉक्टरने बाहरी अुपचार तो किये ही। अुनसे थोड़ा आराम मिलता था, पर मेरे बंधनोंसे वे बहुत घबराते थे। असि बीच गोखले लंदनका अक्तूबर-नवंबरका कुहरा सहन न कर सकनेके कारण देश जानेको रवाना हो गये।

आत्मकथा, पृ० ४४८-५१

९. गोखलेके साथ पूनामें

मेरे बंबअी पहुंचते ही गोखलेने मुझे खबर दी — "गवर्नर तुमसे मिलना चाहते हैं और अच्छा हो कि पूना आनेके पहले तुम अुनसे मिलते आओ।" अतः मैं अुनसे मिलने गया।

मैं पूना पहुंचा। वहांके सब संस्मरण देनेमें मैं असमर्थ हूं। गोखलेने और भारत-सेवक-समाजके सदस्योंने मुझे अपने प्रेमसे सराबोर कर दिया। जहां तक मुझे याद है, सब सदस्योंको अुन्होंने पूना बुलाया था। सबके साथ अनेक विषयों पर दिल खोलकर मेरी बातें हुअीं। गोखलेकी तीव्र अिच्छा थी कि मैं भी सोसायटीमें शामिल हो जाअूं। मेरी अिच्छा तो थी ही। पर सदस्योंको अैसा जान पड़ा कि सोसायटीके आदर्श और अुसके काम करनेका ढंग मुझसे भिन्न है। अिसलिअे मुझे सदस्य होना चाहिये या नहीं, अिस विषयमें अुन्हें शंका थी। गोखलेका खयाल था कि मेरा अपने आदर्श पर दृढ़ रहनेका जितना आग्रह है अुतना ही दूसरोंके आदर्शको निभा लेनेका और अुनके साथ मिल जानेका मेरा स्वभाव है। अुन्होंने कहा — "हमारे सदस्य अभी तुम्हारे अिस निभा लेनेवाले स्वभावको पहचान नहीं पाये हैं। वे अपने आदर्श पर अविचल रहनेवाले, स्वतंत्र और पक्के विचारवाले हैं। मैं अुम्मीद तो रखता ही हूं कि वे तुम्हें स्वीकार करेंगे। पर स्वीकार न करें तो यह न समझना कि अुनका तुम्हारे प्रति कम प्रेम या आदर है। अिस प्रेमको अखंडित रखनेके लिअे ही वे कोअी जोखिम अुठाते डरते हैं। पर तुम सोसायटीके नियमित सदस्य बनो या न बनो, मैं तो तुम्हें सदस्य ही मानूंगा।"

मैंने अपना विचार अुन्हें बता दिया था। सोसायटीका सदस्य बनूं या न बनूं, मुझे अेक आश्रम स्थापित करके अुसमें फिनिक्सके साथियोंको लेकर बैठ जाना था। गुजराती होनेके नाते गुजरातके द्वारा सेवा करनेकी मेरे पास अधिक पूंजी होनी चाहिये, अिस खयालसे गुजरातमें कहीं स्थिर होनेकी मेरी अिच्छा थी। गोखलेको यह विचार पसंद आया। अुन्होंने कहा :

"तुम यह जरूर करो। सदस्योंके साथ बातचीतका नतीजा चाहे जो हो, पर तुम्हें आश्रमके लिअे पैसा मुझसे ही लेना है। अुसे मैं अपना ही आश्रम मानूगा।"

मेरा हृदय फूल अुठा। पैसा अिकट्ठा करनेकी झंझटसे मुझे मुक्ति मिली, यह सोचकर मैं तो बहुत खुश हुआ और अब मुझे अपनी जिम्मेदारी पर नहीं चलना पड़ेगा, बल्कि हर कठिनाओीमें मेरे लिअे अेक रहनुमा होगा, अिस विश्वाससे अैसा जान पड़ा मानो मेरे सिरसे भारी बोझ अुतर गया हो।

गोखलेने स्व० डॉक्टर देवको बुलाकर कह दिया — "गाधीका खाता अपने यहां खोल लो और अुन्हें अुनके आश्रमके लिअे और अुनके सार्वजनिक कामोंके लिअे जितने रुपये जरूरी हों आप देते रहें।"

अब मैं पूना छोड़कर शांतिनिकेतन जानेकी तैयारी कर रहा था। अंतिम रातको गोखलेने मुझे पसंद आने लायक अपने दोस्तोंकी पार्टी की। अुसमें जो चीज मैं खाता था वही यानी सूखे और ताजे फल ही अुन्होंने मंगवाये थे। पार्टी अुनके कमरेसे चंद कदमके फासले पर थी। अुसमें भी आने लायक अुनकी हालत नहीं थी। पर अुनका प्रेम अुन्हें कैसे पड़ा रहने देता? अुन्होंने आनेका आग्रह किया। आये तो जरूर, पर अुन्हें मूर्छा आ गअी और वापस जाना पड़ा। अैसा अुन्हें जब-तब हो जाया करता था। अिससे अुन्होंने यह संदेश भेजा कि हमें पार्टी तो जारी ही रखनी है।

आत्मकथा, पृ० ४७०–७३

३

महात्मा गोखलेकी विरासत

१

[श्री गोपाल कृष्ण गोखलेकी पहली पुण्यतिथि १९ फरवरी, १९१६ को पड़ती थी। अुस दिन श्री गोखलेकी स्मृतिमें की गअी भगिनी-समाज, वम्वअी, की स्थापनाके अवसर पर भेजा गया सन्देश।]

यत् करोपि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत् तपस्यसि कौन्तेय तत् कुरुष्व मदर्पणम्॥

(गीता ९–२७)

.हसतां रमतां प्रगट हरि देखुं रे,
मारुं जीव्युं सफळ तव लेखुं रे,
मुक्तानंदनो नाथ विहारी रे,
ओधा जीवनदोरी अमारी रे.

— मुक्तानंद

श्रीकृष्ण भगवानने अर्जुनसे जो शव्द कहे, वे मानो. भारत माताने महात्मा गोखलेसे कहे हों और अुन शव्दोंको अुन्होंने शिरोधार्य कर लिया हो — अैसा आचरण स्वर्गीय महात्माका था। अुन्होंने जो कुछ किया, जो कुछ भोगा, जो कुछ त्याग किया, जो कुछ दान दिया, जो कुछ तपस्या की, वह सव भारत माताको अर्पण कर दिया था, यह सर्वमान्य वात है।

कवि मुक्तानंदने श्रीकृष्णके प्रति अुद्धवकी जिस दशाका चित्रण किया है, वही दशा महात्मा गोखलेकी भारतके प्रति थी।

अैसे अुदात्त जीवनका संदेश क्या था? अुनकी विरासत क्या है? महात्मा गोखलेने अितना वताना भी वाकी नहीं रखा। अपने अवसानके समय भारत-सेवक-समाजके जो सेवक अुपस्थित थे, अुन्हें वुलाकर अुन्होंने ये शव्द कहे थे:

"मेरा जीवन-चरित्र लिखनेमें तुम न लगना, मेरी मूर्तियां खड़ी करनेमें समय न बिताना, यदि तुम भारतके सच्चे सेवक हो तो हमारे अुद्देश्योंकी पूर्तिमें — अर्थात् भारतकी सेवामें — अपना जीवन समर्पित कर देना।"

अिस सेवाके बारेमें भी अुनके मनके अुद्गार हमारे पास हैं। कांग्रेसको टिकाये रखनेका काम तो है ही, भाषणों और लेखों द्वारा जनसमाजके सामने देशकी सच्ची स्थिति रखनेका काम भी है, प्रत्येक भारतवासीको शिक्षण देनेका कार्य भी है ही। लेकिन यह सब किस लिअे और किस प्रकार किया जाय? अिसका अुत्तर देनेमें गोखलेका दृष्टिकोण हमारी समझमें आता है। अुन्होंने भारत-सेवक-समाजका विधान तैयार करते हुअे लिखा कि सेवकोंका कर्तव्य भारतके राजनीतिक जीवनको धार्मिक बनाना है। अिसमें सब बातोंका समावेश हो जाता है। अुनका जीवन धार्मिक था। मेरी आत्मा अिस बातकी साक्षी देती है कि अुन्होंने जिस समय जो काम किया, वह केवल धार्मिक वृत्तिसे ही किया। २० वर्ष पूर्व अिन महात्माके अुद्गार कभी-कभी नास्तिकके जैसे लगते थे "जो श्रद्धा रानडेमें थी, वह मुझमें नहीं है, हो तो कितना अच्छा हो?" अैसा अेक बार अुन्होंने कहा था। लेकिन अुस समय भी अुनके कार्यमें मैं धर्मवृत्ति देख सकता था। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि अुनकी अिस दशामें ही धर्मवृत्ति थी। जो पुरुष सदाचारी जीवन बिताता है, जिसकी वृत्तियां सादी हैं, जो सत्यकी मूर्ति है, जो नम्रतामय है, जो सत्यका ही स्वरूप है, जिसने अपनेपनका आत्यंतिक त्याग किया है, वह पुरुष स्वयं जाने या न जाने तो भी वह धर्मात्मा है। महात्मा गोखले अैसे पुरुष थे, यह मैं लगभग २० वर्षोंके अुनके समागमके अपने अनुभवसे देख सका था।

सन् १८९६ में नेटालके गिरमिटियोंके प्रश्नकी चर्चा मैंने भारतमें चलाओ थी। अुस समय मैं भारतके नेताओंको केवल नामसे ही जानता था। अुस मौके पर मैं कलकत्ता, बम्बी, पूना और मद्रासमें रहनेवाले नेताओंके सम्पर्कमें पहले-पहल आया था। तब महात्मा गोखले श्री रानडेके शिष्यके रूपमें पहचाने जाते थे और वे फर्ग्युसन

कॉलेजको अपना जीवन अर्पण कर चुके थे। अुस समय मैं केवल अनुभवहीन नवयुवक था। पूनामें हमारी पहली मुलाकातके समय हम दोनोंके बीच प्रेमकी जो गांठ बंधी, वह दूसरे किसी नेता और मेरे बीच नहीं बंधी। महात्मा गोखलेके विषयमें मैंने जो कुछ सुना था, अुसका मैंने प्रत्यक्ष अनुभव किया; लेकिन अुनके मुखारविन्दकी कोमलताने मेरे मन पर जो असर किया, अुसे मैं आज भी नहीं भूल सका हूं। अुन्हें मैंने तुरन्त ही धर्मकी मूर्तिके रूपमें पहचान लिया। अुस समय मुझे रानडेके भी दर्शन हुअे थे, लेकिन अुनके अन्तरमें मैं प्रवेश नहीं कर सका था। अुन्हें मैं केवल गोखलेके गुरुके रूपमें ही जान सका था। वे वय और अनुभवमें मुझसे बहुत बड़े थे अिस कारणसे हो या और किसी कारणसे हो, लेकिन जिस तरह मैं गोखलेको पहचान सका, अुस तरह रानडेको नहीं पहचान सका।

सन् १८९६ के अुपर्युक्त समागमके बाद गोखलेका राजनीतिक जीवन मेरे लिअे आदर्श बन गया। अुस समयसे अुन्होंने मेरे हृदयमें मेरे राजनीतिक गुरुकी तरह निवास किया। अुन्होंने सार्वजनिक सभाके त्रैमासिकमें लेख लिखे, फरग्यूसन कॉलेजमें शिक्षण देकर कॉलेजकी शोभा बढ़ाअी, और वेल्बी-कमीशनके सामने भारत-संबंधी हकीकतें पेश करके अपना सच्चा तेज और बल भारतको दिखा दिया। अुन्होंने लॉर्ड कर्जन पर अपनी कुशलताकी अैसी प्रबल छाप डाली कि और किसीसे न डरनेवाले लार्ड कर्जन भी अुनसे डरते थे। अुन्होंने केन्द्रीय धारासभामें बड़े-बड़े कार्य संपादन करके भारतका नाम अुज्ज्वल किया। अपने जीवनको खतरेमें डालकर अुन्होंने पब्लिक सर्विस कमीशनमें सेवा की। ये और अैसे अनेक कार्य अुन्होंने किये, जिनका वर्णन मेरे बनिस्बत दूसरे लोग ज्यादा अच्छा कर चुके हैं। जिसे मैंने अुनके जीवनका सन्देश माना है और जिसका मैंने अूपर वर्णन किया है, वह अिन कार्योंमें से स्पष्ट रूपसे निकाला जा सकता है, अैसा नहीं कहा जा सकता। अिसलिअे अिस लेखमें मैंने स्वर्ग
अनुभव किया है और अुनके संदेशके प्रमाणरूपमें जो वर
सामने मौजूद है, वही देकर यह लेख पूरा करना चाहता

हमारी सत्याग्रहकी लड़ाअीने अुनके मन पर अितना गहरा असर डाला कि तबीयत खराब होने पर भी दक्षिण अफ्रीकाकी यात्रा करनेका अुन्होंने निश्चय किया। सन् १९१२ में वे दक्षिण अफ्रीका पधारे। वहाके भारतीयोंने अुन्हें बादशाही मान दिया। केप टाअुनमें अुतरे अुसके दूसरे ही दिन वहाके टाअुन हालमें सभा रखी गअी। वहाके मेयर सभाके अध्यक्ष थे। गोखलेकी तबीयत सभाओंमें भाग लेकर भाषण देने जैसी बिलकुल नहीं थी। लेकिन अुनके स्वास्थ्य पर बेहद जोर डालनेवाले जो कार्यक्रम तय हो चुके थे, अुनमें गोखलेने कोअी फेरबदल नहीं किया। अुस निश्चयके अधीन होकर वे टाअुन हालकी अिस सभामें अुपस्थित रहे। पहले ही अनुभवमें अुन्होंने गोरोंके मन जीत लिये। सबके मन पर यह छाप पड़ी कि कोअी पवित्र आत्मा दक्षिण अफ्रीकामें आये हैं। मि० मेरीमनने, जो दक्षिण अफ्रीकाके महान नेता माने जाते हैं और अुदार चरित्रवाले पुरुष हैं, गोखलेके साथकी अपनी मुलाकातमें अुनसे ये शब्द कहे थे : "साहब, आपके जैसे पुरुष जब हमारी भूमि पर आते हैं, तब हमारा वातावरण पवित्र बनता है।"

जैसे-जैसे महात्मा गोखले अपने प्रवासमें आगे बढ़े, वैसे-वैसे यह अनुभव ज्यादा दृढ़ होता गया। जगह-जगह कुछ समयके लिअे तो गोरे और कालेके बीचका भेद मिट गया। हर जगह केप टाअुन जैसी सभायें और जलसे हुअे। अुनमें गोरे और हिन्दुस्तानी लोग अेक कतारमें बैठते थे और महात्मा गोखलेको अेकसा मान देकर गौरवान्वित होते थे। जोहानिसबर्गमें अुनके सम्मानमें दावत दी गअी थी। अुसमें लगभग ३०० प्रसिद्ध गोरे हाजिर थे। वहाके मेयरने अध्यक्षपद ग्रहण किया था। जोहानिसबर्गके गोरे किसीके तेजसे चौंधिया जानेवाले नहीं हैं। अुनमें से कुछ लोग जैसे करोड़पति हैं वैसे ही मनुष्योंको पहचानने-वाले भी हैं। वे महात्मा गोखलेके साथ हाथ मिलानेकी प्रति-योगिता करते थे। अिसका कारण अेक ही था। श्रोतावर्ग महात्मा गोखलेके भाषणमें भारतके प्रति अुनके अपार प्रेमके साथ अुनकी न्यायदृष्टि भी देख सका था। अपने देशके लिअे अुन्होंने सम्पूर्ण

अपमान भले ही सहा जाता, लेकिन दूसरे दलका अपमान न सहा जाता। अपने दलके सारे अधिकारियोंके बारेमें जितने सतर्क थे, अुतनी ही अुनको यह आकांक्षा भी रहती थी कि ऐसा न हो कि दूसरे दलके अधिकारियोंको धक्का न पहुंचे। अिस कारणसे अुनके मनमें सबके स्वाभाविक सम्मान अुत्पन्न होता था।

महात्मा गोखले यह मानते थे कि दक्षिण अफ्रीकामें अुनका सबसे सुन्दर भाषण जोहानिसबर्गमें हुआ था। यह भाषण पौन घंटेसे भी अूपर चला था। फिर भी श्रोताओंमें से कोअी अूब अुठा हो, अैसी छाप मुझ पर न पड़ी। यह भाषण अुन्होंने कैसे किया? अिसकी तैयारी अुन्होंने छः दिन पहलेसे शुरू कर दी थी। अुसके लिअे आवश्यक अितिहास जान लिया, आवश्यक आंकड़े याद कर लिये; फिर भाषणकी पहली रातको जागकर अुसकी भाषा भी जमा ली। परिणाम मैंने बताया वही आया। अुनके भाषणसे गोरों और अुनके देशभाअियों दोनोंको संतोष हुआ।

जब वे दक्षिण अफ्रीकाकी राजधानी प्रिटोरियामें जनरल बोथा और जनरल स्मट्ससे मिले, तब अुनसे मिलनेकी तैयारीमें अुन्होंने जो लगन और सावधानी दिखाअी, अुसे मैं जन्मभर नहीं भूल सकता। मुलाकातके पहले दिन अुन्होंने मेरी और मि० केलनबेककी पूरी परेड ले ली। स्वयं सुबह तीन बजे अुठ गये और हम दोनोंको भी जगा दिया। दिया हुआ साहित्य अुन्होंने पढ़ लिया था। अब अुन्हें मेरे साथ जिरह करके यह जान लेना था कि मुलाकातके लिअे अुन्होंने पूरी तैयारी की है या नहीं। मैंने अुन्हें नम्रतासे कहा, "अितनी ज्यादा मेहनत करनेकी जरूरत नहीं। हमें फिलहाल कुछ नहीं मिला, तो अुसके लिअे हम लड़ लेंगे। परंतु अपनी सुविधाके लिअे हम आपकी बलि नहीं देना चाहते।" परंतु जिन्होंने अपने सारे कार्योंमें अपनी आत्मा अुंड़ेल देनेकी आदत बना ली हो, वे मेरे अिन शब्दों पर क्यों ध्यान देने लगे? अुनकी जिरहका मैं क्या वर्णन करूं? अुनकी सावधानीकी मैं क्या तारीफ करूं? अैसे परिश्रमका अेक ही परिणाम आ सकता था। मंत्रि-मंडलने महात्मा गोखलेको वचन दिया कि सत्या-

ग्रहियोंकी माग स्वीकार करनेवाला कानून मुलाकातके बादकी पार्लियामेन्टकी अगली बैठकमें लाया जायगा और गिरमिटिया मजदूरों पर लगाया हुआ तीन पौंडका वार्षिक कर रद्द कर दिया जायगा।

यह वचन निर्धारित समय पर न पाला गया। फिर भला महात्मा गोखले चुप बैठनेवाले थे? कभी नहीं। मेरा यह विश्वास है कि १९१३ में जिस वचनका पालन करवानेके लिअे अुन्होंने जो परिश्रम अुठाया, अुससे अुनके जीवनके कमसे कम १० वर्ष तो जरूर कम हो गये होंगे। अुनके डॉक्टरोंने अैसा माना है। अुस वर्ष अुन्होंने भारतको जगानेके लिअे तथा दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहियोंके लिअे पैसे अिकट्ठे करनेके लिअे जो कड़ा परिश्रम किया, अुसकी कल्पना कराना कठिन है। दक्षिण अफ्रीकाके प्रश्नने सारे हिन्दुस्तानको हिला दिया था। यह महात्मा गोखलेका ही प्रताप था। मद्रासमें लॉर्ड हार्डिंजने अितिहासमें चिरस्मरणीय रहनेवाला जो भाषण किया, वह भी महात्मा गोखलेका ही प्रताप था। अुनके गाढ़ परिचयमें रहनेवाले लोग अिस बातके साक्षी हैं कि दक्षिण अफ्रीकाके प्रश्नकी चिन्तामें वे शय्यागत हो गये थे, तो भी अन्त तक अुन्होंने आराम लेनेसे अिनकार किया। दक्षिण अफ्रीकासे आधी रातको लम्बे पत्रों जैसे तार आते, अुन्हें अुसी समय पढ़ने, अुसी समय अुनके जवाब तैयार कराने, अुसी समय लॉर्ड हार्डिंजको तार किये जाने और अुसी समय अखबारी बयान तैयार किये जाते। अुस प्रश्न पर ध्यान देनेमें अुनका खाना-पीना बन्द रहता, सोना बन्द रहता और दिन-रातका फर्क भी अुनके लिअे नहीं रह गया था। अैसी अनन्य निःस्वार्थ भक्ति तो धर्मात्मा पुरुष ही कर सकता है।

हिन्दू-मुसलमानके सवालके विषयमें भी अुनकी केवल धार्मिक दृष्टि ही रहती थी। अेक समय गांधुके देशमें हिन्दुत्वका दावा करनेवाला अेक पुरुष अुनके पास आया। अुसकी अिच्छा मुसलमानोंको नीचा गिना कर हिन्दुओंको अूंचा बतानेकी थी। महात्मा गोखले अुसके अिस दावेमें न फंसे, तब अुसने अुन पर यह आरोप लगाया कि आपको हिन्दुत्वके लिअे थोड़ा भी अभिमान नहीं है। महात्मा गोखलेने भौंहें चढ़ाकर हृदयभेदी आवाजमें अुत्तर दिया, "अगर जैसा करने

है जैसा आपमें ही यदि हिन्दुत्व हो, तो मैं हिन्दू नहीं हूं। आप मेरे सामनेसे चले जायं।" और वह तथाकथित संन्यासी अिस सच्चे संन्यासीको छोड़कर चला गया।

महात्मा गोखलेमें निर्भयताका गुण बहुत बड़ी मात्रामें था। धर्मनिष्ठामें अिस गुणका लगभग प्रथम स्थान है। मि० रैंड और लेफ्टिनेन्ट अेमर्स्टके खूनके बाद पूनामें भय फैल गया था। अुस समय महात्मा गोखले अिंग्लैण्डमें थे। अुन्होंने पूनाके बचावमें वहां जो भाषण किया, वह जगविख्यात है। अुसमें कही हुअी कुछ बातें बादमें सिद्ध नहीं की जा सकीं। अतः थोड़े समय बाद जब वे भारत लौटे, अुन्होंने अंग्रेज सैनिकोंसे, जिन पर अुन्होंने आक्षेप लगाये थे, क्षमा मांगी। क्षमा मांगनेसे हिन्दुस्तानकी जनताके कुछ वर्ग नाराज भी हुअे थे। कुछ लोगोंने महात्मा गोखलेको यह सलाह दी कि आपको सार्वजनिक क्षेत्रमें काम करना छोड़ देना चाहिये। कुछ अज्ञान भारतीय अुन पर भीरुताका आरोप लगानेमें भी नहीं हिचकिचाये। अिन सबको अुन्होंने गंभीर और मीठी भाषामें अेक ही अुत्तर दिया, "जो (देशसेवाका) कार्य मैंने किसीके हुक्मसे अपने सिर नहीं लिया, अुसे किसीके हुक्मसे मैं छोड़ भी नहीं सकता। मेरा कर्तव्य बजाते हुअे मैं लोकमतको अपनी तरफ रख सकूं तो अुसे अच्छा मानूंगा; परंतु अितना भाग्यशाली मैं न रहा तो भी अच्छा ही होगा।" कार्य करनेको ही अुन्होंने अपना धर्म माना था। कार्य करते हुअे लोकमत पर अुसका क्या असर होगा, अिसका विचार अुन्होंने कभी स्वार्थदृष्टिसे किया हो अैसा मुझे अनुभव नहीं हुआ। मेरी अैसी मान्यता है कि देशके लिअे सूली पर चढ़ना पड़ता तो वह कार्य भी निडरतापूर्वक और हंसते चेहरे करनेकी अुनमें शक्ति थी। मैं जानता हूं कि बहुत बार जिस स्थितिमें से वे गुजरे थे अुसमें रहनेके बजाय सूली पर चढ़ना अुनके लिअे बहुत आसान था। अैसी विकट स्थितिमें वे अनेक बार फंसे थे, किन्तु अुन्होंने कभी हार नहीं मानी।

अिन सारे अुदाहरणोंसे सार यह निकलता है कि यदि अिस महान देशभक्तके जीवनसे हमें कुछ लेना हो तो अुनकी धार्मिक वृत्तिका अनुकरण करना चाहिये। हम सब केन्द्रीय धारासभामें प्रवेश

नहीं कर सकते; अुसमें प्रवेश करनेसे सदा देशसेवा होती ही है अैसा भी हमने हमेशा नहीं देखा। हम सब पब्लिक सर्विस कमीशनमें नहीं जा सकते, और जानेवाले सब देशभक्त ही नहीं होते। हम सब अुनके जैसे विद्वान नहीं हो सकते, और सारे विद्वान देशसेवक होते हैं अैसा भी हमारे अनुभवमें नहीं आता। परंतु हम सब निर्भयता, सत्य-परायणता, धैर्य, नम्रता, न्यायबुद्धि, सरलता, दृढ़ता आदि गुणोंका अपनेमें विकास करके अुन्हें देशको अर्पण कर सकते हैं। यह धार्मिक वृत्ति है। राजनीतिक जीवनको धर्ममय बनाया जाय, अिस महावाक्यका यही अर्थ है। अिस तरह आचरण करनेवालेको हमेशा मार्ग सूझता रहेगा। वह महात्मा गोखलेकी विरासतमें हिस्सेदार होगा। अैसी निष्ठासे काम करनेवालेको जिन दूसरी विभूतियोंकी आवश्यकता होगी वे अुसे प्राप्त होंगी, अैसा अीश्वरीय वचन है, और महात्मा गोखलेका जीवन अिसका ज्वलन्त प्रमाण है।

१९१६

२

महात्मा गोखलेकी गिरमिट-प्रथा संबंधी प्रवृत्ति अुनकी तन्मयताकी जैसी झांकी कराती है वैसी दूसरी अेक भी प्रवृत्ति नहीं कराती। अुनका दक्षिण अफ्रीकाका प्रवास और अुसके बाद अुनके द्वारा भारतमें चलाया गया आन्दोलन अपने कार्यमें तन्मय हो जानेकी अुनकी शक्तिका हमें सुन्दर दर्शन कराते हैं। और मैंने अनेक बार कहा है कि अुनकी अिस शक्तिकी बदौलत ही अुनके कार्योंमें छिपी हुअी धर्मवृत्तिको हम देख सकते थे।

अब हम अुनके दक्षिण अफ्रीकाके कार्यकी थोड़ी जांच करें। जब अुन्होंने दक्षिण अफ्रीका जानेके विषयमें अपना मत प्रकट किया तब भारत-सरकारके अधिकारियोंमें सनसनी मच गअी। गोखले जैसे मनुष्यका अपमान दक्षिण अफ्रीकामें हो तो कैसा बुरा होगा? दक्षिण अफ्रीका जानेका विचार वे छोड़ दें तो कितना अच्छा! परन्तु अुनसे अैसा कहनेका साहस कौन करे? दक्षिण का चीज है, जिसका अनुभव गोखलेको [illegible]

अुन्होंने अपने लिअे टिकट मंगवाया, लेकिन यूनियन कैसल कंपनीके अधिकारियोंने अुनकी कोअी परवाह नहीं की। यह खबर अिंडिया आफिसमें पहुंची। अिंडिया आफिसने यूनियन कैसल कंपनीके मैनेजर सर ओवन टयूडरको कड़ी हिदायत दी कि गोखलेके दर्जेको शोभा दे अैसा मान-सम्मान अुनका कंपनीको करना चाहिये। अिसका नतीजा यह आया कि गोखले अेक सम्माननीय मेहमानकी तरह स्टीमरमें प्रवास कर सके। मुझे अिस घटनाका किस्सा सुनाते हुअे अुन्होंने कहा था, "मुझे अपने मान-सम्मानकी बिलकुल परवाह नहीं, लेकिन देशका सम्मान मुझे प्राणोंके समान प्यारा है। और अिस समय मैं अेक सार्व-जनिक व्यक्तिके नाते आ रहा था, अिसलिअे मेरा अपमान हिन्दुस्तानके अपमानके बराबर है, अैसा मानकर मैंने स्टीमरमें अैसी सुविधायें प्राप्त करनेका प्रयत्न किया जिससे मेरे सम्मानकी रक्षा हो सके।" यह घटना घटी अिसलिअे अिंडिया आफिसने अैसी तजवीज की थी कि कॉलोनियल आफिस द्वारा दक्षिण अफ्रीकामें भी गोखलेका पूरा सत्कार हो। अिसलिअे यूनियन सरकारने पहलेसे ही गोखलेके आदर-सत्कारका प्रबंध कर रखा था। अुनके लिअे अेक विशेष रेलवे सेलून तैयार करा रखा था। और यात्रामें रसोअिये वगैराका भी बन्दोबस्त किया था। अुनकी देख-भालका काम अेक सरकारी अधिकारीको सौंपा गया था। भार-तीयोंने तो किसी बादशाहको भी नसीब न हो अैसा मान जगह-जगह अुन्हें देनेका प्रबंध कर रखा था। गोखलेने यूनियन सरकारकी मेहमानदारी तो केवल यूनियनकी अेक राजधानी प्रिटोरियामें ही स्वीकार की। बाकीके सारे स्थानोंमें वे भारतीय समाजके ही मेहमान रहे। केपटाअुनमें प्रवेश करते ही अुन्होंने दक्षिण अफ्रीकाके प्रश्नका विशेष अध्ययन शुरू कर दिया। अिस विषयका जो सामान्य ज्ञान प्राप्त करके वे केप टाअुनमें अुतरे थे, वह भी कोअी अैसा-वैसा नहीं था। परंतु अुनकी दृष्टिमें वह काफी नहीं था। दक्षिण अफ्रीकाके अपने चार सप्ताहके निवासकालमें अुन्होंने वहांके हिन्दु-स्तानियोंके प्रश्नका अितना गहरा अध्ययन किया कि जो भी अुनसे मिलने आते वे गोखलेके अिस ज्ञानसे चकित हो जाते थे

जब जनरल बोथा और जनरल स्मट्ससे मिलनेका समय आया, तब अुन्होंने अितनी ज्यादा नोटें तैयार करवाओ कि मुझे लगता था कि अितना अधिक परिश्रम वे किसलिओ कर रहे हैं। सारे समय अुनकी तबीयत नाजुक ही रही; अुन्हें बहुत ज्यादा सार-संभालकी जरूरत थी। परन्तु अैसी नाजुक तबीयत होने हुओ भी रातके बारह-बारह बजे तक वे काम करते रहते और सवेरे फिर दो बजे या चार बजे अुठ कर कागज-पत्रोंकी मांग करते थे। अिसके फलस्वरूप जनरल बोथा और जनरल स्मट्सके साथ हुआी अुनकी मुलाकातमें से गिरमिटिया मजदूरोंके ३ पौंडके वार्षिक करके खिलाफ की गअी सत्याग्रहकी लड़ाअीका जन्म हुआ। यह कर १८९३ के सालसे गिरमिट-प्रथासे मुक्त हुओ पुरुषों, अुनकी स्त्रियों और अुनके लड़के-लड़कियों पर लगता था। यदि गिरमिटसे मुक्त हुआ पुरुष यह कर देना स्वीकार न करे, तो यूनियन सरकारका कानून अुसे वापिस हिन्दुस्तान लौटनेके लिओ मजबूर करता था। अिसलिओ गिरमिटमें, सच पूछा जाय तो, गुलामोंमें फंसे हुओ भारतीयकी दशा बड़ी विषम हो गअी थी। अपना सब कुछ त्याग कर स्त्री-बच्चोंके साथ दक्षिण अफ्रीका आया हुआ वह हिन्दुस्तान लौट कर भला क्या करे? और यहां तो अुसके नसीबमें भुखमरी ही बदी थी। जन्मभर गिरमिटकी गुलामीमें भी कैसे रहा जाय? अुसके खानदानके स्वतंत्र आदमी जब महीनेके ४ पौण्ड, ५ पौण्ड या १० पौंड तक कमाते हों, तब वह महीनेमें केवल १४–१५ शिलिंग लेकर कैसे सन्तुष्ट रहे? और अगर वह गिरमिटसे मुक्त होकर स्वतंत्र मनुष्यकी तरह जीवन बिताना चाहे और मान लीजिये अुसे अेक लड़का और अेक लड़की हो, तो स्त्री-बच्चों सहित अुसे प्रतिवर्ष १२ पौंडका कर देना पड़ता। अितना भारी कर वह कैसे भरे? यह कर हासिल किया गया तभीसे अिस बारेमें हिन्दुस्तानी [illegible] लोग जबरदस्त लड़ाअी लड़ रहे थे। हिन्दुस्तानमें भी अिसकी [illegible] अुत्पन्न हुअी थी। परन्तु अभी तक यह कर रद्द नहीं हुआ था। अनेक [illegible] [illegible] [illegible] यूनियन सरकारके सामने रखी थी। अिस [illegible] से [illegible]

आगबबूला हो अुठे थे, मानो अपने गरीब देशबन्धुओं पर
करका बोझ खुद अुन्हीं पर पड़ रहा हो। जनरल बोथाके
अपनी आत्माकी संपूर्ण शक्तिका प्रयोग किया। जनरल
जनरल स्मट्स पर अुनकी बातोंका अैसा प्रभाव पड़ा कि
और अुन्होंने यह वचन दिया कि यूनियन पार्लियामेन्टकी
यह कर रद्द हो जायगा। गोखलेने यह
सुनाअी थी। दूसरे वचन भी अिन अधिकारियोंने
समय हम केवल गिरमिटके बारेमें ही विचार
यूनियन सरकारके साथ अुनकी मुलाकातका
देता हूं। पार्लियामेन्टकी बैठक हुअी। अुस
अफ्रीकामें नहीं थे। दक्षिण अफ्रीकामें
चला कि ३ पौंडका कर रद्द नहीं होगा।
सदस्योंको थोड़ा-बहुत समझानेका प्रयत्न किया
वह काफी नहीं था। भारतीय लोगोंने
३ पौंडका कर किसी भी तरह रद्द
वचन दे चुकी है। अिसलिअे अगर
तो १९०६ से जो सत्याग्रह चल रहा
बात भी शामिल कर दी जायगी।
अिसकी सूचना की। गोखलेने अिस
सरकारने भारतीय समाजकी चेतावनी
परिणाम सब कोअी जानते हैं।
हिन्दुस्तानी *सत्याग्रहकी लड़ाअीमें*
असह्य दुःख सहन किये, बहुतेरे
गोखलेको दिया हुआ वचन पाला

१९१७

३

शिष्य गुरुके विषयमें क्या लिखे
विषयमें कुछ लिखना अेक तरहकी अु...

गुरुमें समा जाता है। अिसलिअे वह टीकाकार तो हो ही नहीं सकता। जो दोष देखती है, वह भक्ति ही नहीं है, और जो गुण-दोषका पृथक्करण नहीं कर सकता, अुसे लेखककी स्तुतिको अगर लोग स्वीकार न करें, तो शिकायत नहीं की जा सकती। शिष्यका आचरण ही गुरुकी टीका है। गोखले मेरे राजनीतिक गुरु थे, अैसा मैंने कअी बार कहा है। अिसलिअे अुनके विषयमें कुछ लिखनेके लिअे मैं अपनेको असमर्थ मानता हूं। जो लिखूंगा वह मुझे न्यून ही लगेगा। मुझे लगता है कि गुरु-शिष्यके बीचका संबंध केवल आध्यात्मिक ही होता है। अुसका निर्माण गणित-शास्त्रकी पद्धति पर नहीं होता। मानो अनायास हुआ हो, अिस तरह क्षणमात्रमें यह संबंध बंधता है और अेक बार बंधने पर फिर कभी टूट नहीं सकता।

सन् १८९६ में हमारे बीच यह संबंध बंधा। अुस समय तो मुझे अिस संबंधका कुछ भी भान नहीं था। अुनको भी नहीं था। अिसी समय मुझे गुरुके गुरु,* लोकमान्य तिलक, सर फीरोजशाह मेहता, न्यायमूर्ति बदरुद्दीन तैयबजी, डॉ॰ भाण्डारकर, और अिसी तरह बंगाल तथा मद्रासके नेताओंको नमस्कार करनेका शुभ अवसर प्राप्त हुआ था। मैं बिलकुल तरुण अवस्थाका था। सभीने मेरे अूपर प्रेमकी वर्षा की थी। वे अैसे सुखद प्रसंग थे जिन्हें मैं जीवनभर भूल नहीं सकता। लेकिन जो शीतलता मुझे गोखलेके सम्पर्कमें मिली, वह मैं दूसरोंके पास नहीं प्राप्त कर सका। गोखलेने मेरे अूपर अधिक प्रेम अुंडेला हो, अैसा मुझे बिलकुल स्मरण नहीं है। किसने कितना प्रेम किया, यही बताना हो तो मुझे अैसा स्मरण है कि डॉ॰ भाण्डारकरने मेरे प्रति जैसा अपूर्व प्रेमभाव प्रदर्शित किया वैसा किसी औरने नहीं किया। अुन्होंने मुझसे कहा, "मैं आजकल सार्वजनिक प्रवृत्तियोंमें भाग नहीं लेता, लेकिन तुम्हारे खातिर तुम्हारे प्रश्नसे संबंधित सभामें सभापतित्व करना मैं स्वीकार करूंगा।" तो

* न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानडे।

मुझे केवल गोखले ही प्रेमबन्धनमें बांध सके। अिस संबंधका तुरन्त ही कोअी परिणाम नहीं हुआ। किंतु सन् १९०२ में जब मैं कलकत्तेकी कांग्रेसमें अुपस्थित रहा, अुस समय मुझे अपनी शिष्य-दशाका संपूर्ण ज्ञान हुआ। अूपरके लगभग सभी नेताओंके दर्शनका लाभ मुझे अिस बार फिर मिला। मैंने देखा कि गोखले मुझे भूले नहीं थे। अितना ही नहीं, अुन्होंने मुझे आश्रय भी दिया। स्थूल परिणाम अिसके अनुसार ही आये। मुझे वे अपने घर घसीट ले गये। विषय-विचारिणी सभामें मुझे लगा कि मैं यहां व्यर्थ ही आया। प्रस्तावोंकी चर्चा चल रही थी, अुस समय अन्त तक मेरी यह कहनेकी हिम्मत न हुअी कि मेरी जेबमें दक्षिण अफ्रीकाके विषयमें अेक प्रस्ताव पड़ा हुआ है। रात तो मेरे लिअे रुकनेवाली नहीं थी। नेता लगभग काम समाप्त कर डालनेके लिअे अधीर हो रहे थे। ये लोग अभी अुठ जायंगे, अिस डरसे मेरा जी कांप रहा था। गोखलेको भी याद दिलानेकी मेरी हिम्मत न हुअी। अितनेमें तो वे बोल अुठे, "गांधीके पास दक्षिण अफ्रीकाके भारतीयोंके विषयमें अेक प्रस्ताव है, अुस पर हमें विचार करना पड़ेगा।" मेरे आनन्दका पार नहीं रहा। कांग्रेसका यह मेरा पहला अनुभव था, अिसलिअे कांग्रेसमें पास होनेवाले प्रस्तावोंकी कीमत मेरी नजरमें बहुत थी। अिसके बादके भी अनेक स्मरणीय प्रसंग हैं और वे सब पवित्र हैं। परन्तु अभी तो जिसे मैंने अुनका महामंत्र माना है, अुसका वर्णन करके ही प्रस्तावना पूरी करना अुचित मालूम होता है।

अिस कठिन कलिकालमें शुद्ध धर्मवृत्ति विरली ही जगह देखनेमें आती है। अृषियों, मुनियों, साधुओं आदिके नामसे जो लोग आज हमें भ्रमण करते हुअे दिखाअी देते हैं, अुनमें यह वृत्ति शायद ही कभी दिखाअी पड़ती हो। यह तो सभी देख सकते हैं कि धर्मके कोपकी चाबी अुनके पास नहीं है। धर्म क्या है, अिसे भक्तशिरोमणि कवि नरसिंह मेहताने अेक ही सुन्दर वाक्यमें बहुत अच्छी तरह प्रगट किया है। वे कहते हैं:

'ज्यां लगी आतमातत्त्व चीन्यो नहीं,
त्यां लगी साधना सर्व जूठी।'*

यह अुनके अनुभव-सागरमें से निकला हुआ अुनका वचन है। अिससे हमारी समझमें आ जाता है कि महातपस्वी या योगकी सारी क्रियायें जाननेवाले महायोगीमें भी हमेशा धर्मका वास नहीं होता। गोखलेने अिस आत्मतत्त्वको भलीभांति पहचान लिया था, अिस विषयमें मुझे जरा भी शंका नहीं है। अुन्होंने धर्मका दिखावा कभी नहीं किया, पर अुनका जीवन धर्ममय था। जब-जब धर्मकी शिथिलता दिखायी देती है, तब-तब किसी प्रधान प्रवृत्तिके जरिये धर्म-जागृति होती है। अैसी प्रवृत्ति हमेशा अुस-अुस समयके वातावरणके साथ सम्बन्ध रखनेवाली होती है। अिस समय हम अपनी अवनत दशाका अनुभव अपनी राजनीतिक स्थितिमें करते हैं। अपूर्ण विचारके कारण हम अैसा मान लेते हैं कि राजनीतिक स्थिति सुधरते ही हमारी अुन्नति होगी। लेकिन यह धारणा अंशतः ही सही है। यह ठीक है कि राजनीतिक स्थिति जब तक सुधरती नहीं, तब तक हमारी अुन्नति नहीं हो सकती। लेकिन राजनीतिक स्थितिमें चाहे जिस तरह परिवर्तन हो तो भी अुन्नति ही होगी, अैसी बात नहीं है। अिस परिवर्तनको लानेवाले साधन यदि दूषित हों, तो परिवर्तनसे अुन्नतिके बजाय अवनति होनेकी ही अधिक संभावना है। राजनीतिक स्थितिमें शुद्ध साधनों द्वारा लाया हुआ परिवर्तन ही हमें अुच्च मार्गकी ओर ले जा सकता है। यह गोखलेने अपने सार्वजनिक जीवनके आरंभमें केवल समझ ही नहीं लिया था, बल्कि अिस सिद्धान्त पर अमल भी किया था। गोखलेने अपने भारत-सेवक-समाज और जनताके समक्ष यह भव्य विचार पेश किया कि यदि अिस प्रवृत्तिको धर्मका स्वरूप दिया जाय तो राजनीतिक प्रवृत्ति मोक्षका रास्ता दिखानेवाली भी होगी। अुन्होंने दृढतापूर्वक कहा कि हमारी राजनीतिक प्रवृत्तिमें

---

* जहां तक आत्मतत्त्वको नहीं पहचाना, वहां तक सारी साधना व्यर्थ है।

जब तक धर्मवृत्तिका प्रवेश नहीं होता, तब तक वह शुष्क ही रहेगा।

'टाअिम्स ऑफ अिण्डिया' के लेखकने गोखलेकी मृत्यु पर लिखते हुअे अुनके कार्यकी अिस विलक्षणता पर ध्यान खींचा था और अिस तरह राजनीतिक संन्यासी निर्माण करनेका अुनका प्रयत्न सफल होगा या नहीं, अिस विषयमें शंका प्रकट करके अुनके द्वारा स्थापित भारत-सेवक-समाजको सावधान किया था। अिस जमानेमें राजनीतिक संन्यासी ही संन्यासकी शोभा बढ़ा सकेंगे, दूसरे तो प्रायः भगवेको लजायेंगे ही। शुद्ध धर्ममार्ग पर चलनेवाला कोअी भी भारतवासी राजनीतिक कार्योंमें भाग लिये विना नहीं रह सकता। दूसरे शब्दोंमें कहें तो शुद्ध धर्ममार्गी लोकसेवाको अपनाये विना रह ही नहीं सकता। और राजतंत्रके जालमें हम सब अितने अधिक जकड़े हुअे हैं कि अुसमें पड़े विना लोकसेवा संभव ही नहीं है। जो किसान पुराने समयमें राज्याधिकारी कौन है यह जाने विना ही अपना सरल जीवन निर्भयतापूर्वक विता सकते थे, अुनकी भी अब वैसी निराली स्थिति नहीं रह गयी है। अिस वड़ी वातको यदि हमारे साधु, ऋषि, मुनि, मौलवी और पादरी स्वीकार करें, तो जगह-जगह भारत-सेवक-समाज खड़ा हो जाय और धर्मवृत्ति हिन्दुस्तानमें अितनी व्यापक वन जाय कि आजका अप्रिय और अरुचिकर मालूम होनेवाला राजतंत्र शुद्ध हो जाय, हिन्दुस्तानमें किसी समय जो धार्मिक साम्राज्य फैला हुआ था अुसकी पुनः स्थापना हो जाय, भारत माताके वंधन अेक क्षणमें टूट जायं और अेक प्राचीन द्रष्टाकी अमर वाणीमें वर्णित यह स्थिति अुत्पन्न हो जाय—तव लोहेका अुपयोग तलवार वनानेमें नहीं, हल वनानेमें होगा और सिंहके साथ वकरी मित्रभावसे विचरण करेगी। अैसी स्थिति अुत्पन्न करनेवाली प्रवृत्ति ही गोखलेका जीवन-मंत्र थी। यही अुनका संदेश है और मैं मानता हूं कि जो भी व्यक्ति अुनके भाषण सरल मनसे पढ़ेगा, अुसे यह मंत्र अुनके शब्द शब्दमें गूंजता मालूम होगा।

१९१८

४

मेरे जीवनमें गोखलेका स्थान

अेक विचित्र गुमनाम पत्र मुझे मिला है। जो कार्य लोकमान्यको प्राणोंसे भी प्रिय था, अुसे अुठा लेनेके लिअे पत्रलेखकने मेरी प्रशंसा की है और यह आशा प्रगट की है कि मैं यह बात हमेशा ध्यानमें रखूंगा कि जिस समय मेरे अन्दर लोकमान्यकी आत्मा वास कर रही है, अैसा समझकर मुझे अब अुनके अनुयायी-पदकी शोभा बढ़ानी ही होगी। जिसके बाद मुझे जिस पत्रमें हिम्मत न हारकर स्वराज्यके कार्यक्रममें आगे बढ़ते जानेका अुपदेश दिया गया है। और अन्तमें मुझे साफ सुनाया गया है कि मैं राजनीतिक क्षेत्रमें हमेशा जो गोखलेका शिष्य होनेका दावा करता हूं, वह सिर्फ मेरा दंभ है!

मैं चाहता हू कि पत्रलेखक गुमनाम पत्र लिखनेकी भयपूर्ण गुलामीसे मुक्त हो जाय। स्वराज्यका जोश अपने भीतर बढ़ा रहे हम लोग यदि आगे आकर निर्भयतापूर्वक अपने मनकी बात स्पष्ट कह देनेकी भी हिम्मत नहीं दिखा सकें, तो हम अपना काम कैसे करेंगे?

तो भी जिस पत्रमें अुठाअी हुअी बात सार्वजनिक महत्त्वकी होनेके कारण मैं अुसका अुत्तर देना जरूरी मानता हूं। स्वर्गीय लोकमान्यके अनुयायी-पदके सम्मानका दावा मुझसे किया ही नहीं जा सकता। लाखों-करोड़ों भारतीयोंकी तरह मैं भी अुनके अजेय मनोबल, अुनकी अगाध विद्वत्ता, अुनकी देशभक्ति और अुनके सर्वोच्च चारित्र्य और स्वार्थत्यागके लिअे अुन्हें पूजता हूं। जिस कालके सारे राष्ट्रपुरुषोंमें सबसे ज्यादा स्थान जनताके हृदयमें अुन्होंने ही पाया। अुन्होंने हम लोगोंमें स्वराज्यका जोश जगाया। मौजूदा राजतंत्रकी दुष्टता जितनी अुन्होंने पहचानी थी, अुतनी शायद किसी दूसरेने नहीं पहचानी। अलबत्ता, पूरी विनम्रताके साथ आज मैं यह दावा करता हू कि जनताको मैं लोकमान्यका संदेश अुनके चुस्तसे चुस्त शिष्यके जितनी वफादारीसे ही सुना

लेकिन साथ ही मुझे अिस बातका भी पूरा-पूरा भान है कि मेरी कार्यपद्धति लोकमान्यकी कार्यपद्धति नहीं है। और अिसी कारणसे महाराष्ट्रके कतिपय नेताओंके साथ अेकमत होना मेरे लिअे आज भी मुश्किल हो रहा है। तो भी मैं सच्चे दिलसे मानता हूं कि लोकमान्यको मेरी पद्धतिमें अश्रद्धा नहीं थी। मुझे अुनका विश्वास प्राप्त था, और अुनकी मृत्युके कोअी पन्द्रह दिन पहले अुन्होंने अपने कअी मित्रोंकी अुपस्थितिमें मुझसे यह कहा भी था कि यदि लोगोंको अिस दिशामें मोड़ा जा सके तो मेरी पद्धति सुन्दर है। अुन्हें शंका अिसी बातकी थी कि जनताको अिस मार्ग पर मोड़ा जा सकता है या नहीं।

मेरे पास दूसरी कोअी पद्धति है ही नहीं। मैं तो यही आशा करता हूं कि जब परीक्षाका समय जायेगा, तब जनता यह सिद्ध कर दिखायेगी कि अुसने अहिंसात्मक असहकारकी पद्धतिको पूरी तरह साध लिया है।

अपनी दूसरी कमियोंसे भी मैं अनजान नहीं हूं। विद्वत्ताका मैं कोअी दावा नहीं कर सकता। लोकमान्यमें जो योजना-शक्ति थी, वह मुझमें नहीं है। मेरे पीछे चलनेवाला कोअी अैसा दल नहीं है जो अेकदिल हो और जिसे व्यवस्थित तालीम देकर तैयार किया गया हो। जीवनके तेअीस वर्ष तक देशके बाहर रहा हुआ मैं भारत-संबंधी अनुभवका लोकमान्य जितना दावा तो कर ही कैसे सकता हूं? फिर भी हम दोनोंमें दो बातें अेक-सी कही जा सकती हैं — देशका प्रेम और स्वराज्यके लिअे सतत प्रयत्न। और अिस आधार पर मैं अिन गुमनाम लेखकको विश्वास दिलाता हूं कि लोकमान्यके प्रति अपने पूज्यभावमें किसीसे पीछे न रहकर मैं स्वराज्यकी लड़ाअीके मार्गमें अुनके सबसे अग्रगण्य शिष्योंके कदमोंसे कदम मिलाकर आगे बढ़ता जाअूंगा। मैं जानता हूं कि स्वर्गीय लोकमान्यको स्वीकार हो अैसी अेक ही अंजलि हम अुन्हें दे सकते हैं और वह है भारतमें जल्दीसे जल्दी स्वराज्यकी स्थापना करनेकी। हम जानते हैं कि यही अेक चीज लोकमान्यकी दिवंगत आत्माको शाश्वत शांति दे सकती है।

लेकिन शिष्यत्व निराली ही वस्तु है। वह अेक पवित्र वैयक्तिक वस्तु है। ठेठ १८८८ में मैं दादाभाअीके चरणोंमें बैठा। लेकिन मुझे वे बहुतसे दूर मालूम हुअे। मैं अुनका पुत्र हो सकता था। लेकिन शिष्यका पुत्रसे अधिक निकटका संबंध है। शिष्य होना नया जन्म लेने जैसा है। वह स्वेच्छासे किया हुआ आत्म-समर्पण है। १८९६ में मुझे दक्षिण अफ्रीकाके अपने कार्यके निमित्तसे हिन्दुस्तानके तत्कालीन सभी प्रसिद्ध नेताओंके सम्पर्कमें आनेका मौका मिला। न्यायमूर्ति रानडेके सामने तो मैं अेकदम हतप्रभ हो गया था। अुनके समक्ष बोलनेमें भी मैं कांपता था। स्व० बदरुद्दीन तैयबजीने मेरे अूपर पिता जैसा स्नेह दिखाया; मुझे रानडे और फीरोजशाहकी सलाहके अनुसार चलनेकी सीख दी। सर फीरोजशाहने तो मेरे साथ घरके बुजुर्ग जैसा ही बर्ताव किया। अुनका शब्द तो कानून ही था। "गांधी, तुम्हें २६ सितम्बरको भाषण देना है। और देखो, वक्तकी पाबन्दी रखना।" मैंने आज्ञा स्वीकार की। २५ की शामको फिर मिलनेका आदेश था। २५ की शाम आयी और मैं हाजिर हुआ।

"भाषण लिख लिया है कि नहीं?"

"नहीं, साहब!"

"भले आदमी, यह नहीं चलेगा। आज रातको लिख डालोगे?

"मुंशी, तुम गांधीके यहां जाना, और ये जो भाषण दें अुसे रातोंरात छपवाकर अुसकी अेक नकल मुझे देना।" फिर मेरी तरफ मुड़कर कहा, "देखो गांधी, बहुत गहराअीमें मत जाना। तुम्हें शायद पता नहीं होगा कि बम्बअीके लोग लम्बे लम्बे भाषण नहीं सुनते।"

मैंने फिर सिर झुकाकर अुनकी बात स्वीकार की। बंबअीके सिंहने मुझे आज्ञापालन करना सिखाया। अुन्होंने मुझे शिष्य नहीं बनाया, बनानेका प्रयत्न भी नहीं किया।

वहांसे मैं पूना गया। बिलकुल अपरिचित था। जिनके यहां ठहरा, वे भाअी पहले मुझे तिलक महाराजके घर ले गये। मैंने अुन्हें मित्रोंसे

गिरा हुआ देखा। मेरी बात अुन्होंने ध्यानपूर्वक सुनी और कहा, "तुम्हारे कामके लिअे हमें अेक सभा तो बुलानी ही चाहिये। लेकिन शायद तुम नहीं जानते होंगे कि दुर्भाग्यसे हमारे यहां दो पक्ष हैं। मुझे तुम्हें अैसा सभापति खोज देना चाहिये, जो दोमें से किसी पक्षका न हो। तुम डॉ० भांडारकरसे मिलोगे?"

मैंने हां कहा और विदा मांगी। अिस प्रसंगकी मुझे स्पष्ट स्मृति नहीं रही है। अितना ही याद है कि कुछ भी अंतर न रखते हुअे अपने प्रेमल व्यवहारसे अुन्होंने मेरी प्रारंभिक घबराहट दूर कर दी थी।

अुसके बाद मैं बहुत करके गोखलेसे मिला और बादमें डॉ० भांडारकरके यहां पहुंचा। जिस तरह कोअी वृद्ध गुरु शिष्यका स्वागत करता है, अुसी तरह अुन्होंने मेरा स्वागत किया।

"तुम अुत्साही और लगनवाले युवक मालूम होते हो। अैसी तेज धूपमें अितनी दूर मुझे मिलनेके लिअे बहुत कम लोग आते हैं। मैं आजकल सार्वजनिक सभाओंमें बिलकुल नहीं जाता। लेकिन तुमने जो बात सुनाअी, वह अितनी हृदयद्रावक है कि मुझसे अिनकार किया ही नहीं जा सकता।"

गंभीर मुद्रावाले अिन ज्ञानवृद्ध विद्वद्वर्यकी मन ही मन मैंने पूजा की। लेकिन अपने हृदय-सिंहासन पर मैं अुन्हें नहीं बिठा सका। वह अभी खाली ही रहा। संत तो बहुत मिले, परन्तु मेरा गुरु मुझे नहीं मिला।

किन्तु गोखलेकी बात अिन सबसे निराली थी। क्यों, यह मैं नहीं बता सकता। फरग्यूसन कॉलेजके कम्पाअुन्डमें अुनके घर मैं अुनसे मिला। मुझे अैसा अनुभव हुआ मानो किसी पुराने मित्रसे मिलाप हुआ हो, अथवा अिससे भी ज्यादा सार्थक शब्दोंमें कहूं तो मानो वर्षोंसे बिछड़े हुअे मां-बेटे मिले हों। अुनकी प्रेमभरी मुखमुद्राने अेक क्षणमें मेरे मनका सारा भय दूर कर दिया। मेरे बारेमें और दक्षिण अफ्रीकाके मेरे कामके बारेमें अुन्होंने बारीकसे बारीक विगत पूछी।

अुन्होंने मेरा हृदय-मन्दिर तत्काल जीत लिया। और जब मैंने अुनसे विदा ली, अुस समय मेरे मनमें अेक ही ध्वनि अुठी :

"यही है मेरा गुरु।"

अुस घडीसे गोखलेने किसी दिन भी मुझे भुलाया नही। सन् १९०१ में मैं दुबारा हिन्दुस्तान आया और हम लोग ज्यादा निकट समागममें आये। अुन्होंने मुझे अपने हाथमें लिया और गढना शुरू किया। मैं कैसे बोलता हूं, कैसे चलता हूं, कैसे खाता-पीता हू — हर बातकी चिंता वे रखते थे। मेरी माने भी शायद ही मेरी अितनी चिन्ता की हो। जहां तक मुझे याद है, हमारे बीचमें किसी तरहका परदा नही था। सचमुच पहली दृष्टिमें ही प्रेम-सूत्रमें बंध जानेवालों जैसा हमारा सबंध था। और सन् १९१३ में तो वह कठिनसे कठिन कसौटीसे भी पार हुआ। राजनीतिक कार्यकर्ताओं सबंधी मेरे आदर्शके वे सपूर्ण अुदाहरण थे।

वे स्फटिकके समान निर्मल, गाय जैसे गरीब और सिंह जैसे शूर थे; अुदार अितने कि अुसे दोष भी मान सकते हैं। हो सकता है, किसीको अिन गुणोंमें से अेक भी गुण अुनमें नजर न आया हो। मुझे अुससे कोअी मतलब नही। मेरे लिअे तो अितना ही बस है कि मुझे अुनमें कही अंगुली दिखाने लायक भी खामी नजर नही आयी। मेरी दृष्टिमें तो राजनीतिक क्षेत्रमें आज भी वे आदर्श पुरुष ही हैं।

अिसका अर्थ यह नही है कि हमारे बीच कोअी मतभेद नही था। ठेठ १९०१ में भी हमारे बीच सामाजिक सुधारोंके संबंधमें मतभेद था। अुदाहरणके लिअे, विधवा-विवाहके विषयमें। पाश्चात्य सुधारोंके मूल्यांकनके सबंधमें भी हमें अपने बीच कुछ मतभेद मालूम हुआ था। मेरे अहिंसा-संबंधी कठिन आदर्शमें भी अुनका स्पष्ट मतभेद था। लेकिन अैसे मतभेद हममें से किसीके मार्गमें बाधक नही हुअे। हमें अेक-दूसरेसे अलग कर सके, अैसी कोअी चीज नहीं थी। आज वे जीवित होते तो क्या करते, अिस प्रश्नको लेकर कल्पनाकी तरंगों पार और नास्तिकता समझता हूं। मैं तो अितना ही भी मैं अुनकी ही छत्रछायामें काम कर रहा

पानी पीने लगें। मेरे मनमें यह विचार भी आया कि पूरे यंत्रमें अगर अेक पेंच भी ढीला हो जाय तो सारा काम बिगड़ जाय। मनुष्य-जातिके साथ अिस विचारकी तुलना करें तो हमने कअी बार देखा है कि अेक धांधली मचानेवाला आदमी सारी सभाको अस्तव्यस्त कर देता है और परिवारका अेक कपूत सारे कुटुम्बकी आबरूको मिट्टीमें मिला देता है। फिर, अिससे अुलटा देखें तो यंत्रका मुख्य भाग यदि ठीक काम करे तो दूसरे भाग भी अपना-अपना काम अच्छी तरहसे करते रहते हैं।

गोखलेके अुद्देश्यको मैं पवित्र अुद्देश्य मानता हूं। किम्बरलीमें बड़ेसे बड़े यूरोपियन और हिन्दुस्तानी साथ मिलकर अेक मेज पर खाना खाने बैठे। अिस घटनामें गोखले कारणभूत बने, यह मेरे लिअे बड़े गौरवकी बात है। टॉल्स्टॉयके जीवन और शिक्षाके अेक नम्र अभ्यासीके नाते मुझे अैसा भी लगता है कि अैसे बड़े समारोह गैरजरूरी है और अिनसे कभी-कभी बहुतसे नुकसान — और कुछ नहीं तो पाचन-क्रियामें विघ्न पड़नेका नुकसान — होते है। (लोग खिलखिला अुठते हैं) मैं टॉल्स्टॉयके जीवनका अभ्यासी हूं, तो भी अैसे समारोहोंसे यदि अेक-दूसरेको अधिक अच्छी तरह जानने-पहचाननेका मौका मिलता हो तो मैं अिनमें दोष नहीं निकालूंगा। अिस मौके पर मुझे अेक सुन्दर अंग्रेजी भजन याद आता है — 'वी शेल नो अीच अदर बैटर व्हेन दि मिस्ट्स हैव रोल्ड अवे'। हमारा अज्ञान दूर हो जाय, तो आपसी मतभेदोंके होते हुअे भी हम अेक-दूसरेके भावोंको ज्यादा अच्छी तरह समझ सकते हैं। मेरे प्रख्यात देशबंधु यहां हमारे अज्ञानका अंधकार दूर करनेके लिअे ही आये हैं। भारत अेज सके अैसे अेक अुम्दा अमूल्य जवाहरके रूपमें वे यहां आये हैं। मैं जानता हूं कि जब मैं गोखलेके कार्योंके विषयमें कुछ कहता हूं, तब अुनकी भावनाओंको ठेस पहुंचती है। फिर भी मुझे अपना यह फर्ज अदा करना चाहिये। अुनके हिन्दुस्तानमें गोखलेने राजनीतिक क्षेत्रमें जो कीर्ति पाअी है, अुसके विषयमें मेरे जितना दूसरा यहां कोअी नहीं कह सकता। हिन्दुस्तानके वाअिसरॉय तो केवल ५ वर्ष तक ही हिन्दुस्तानकी सल्तनतका काम

जिस समय दुनिया मुझे विपक्षमें मिल गया मान रही है, अुस समय गोखलेके प्रति अपनी वफादारी जाहिर करके अपने हृदयका स्पष्ट अिकरार करना मैं अपना कर्तव्य मानता हूं।

१९२१

५

गोखलेके विषयमें भाषण

१

[गोपाल कृष्ण गोखलेके सम्मानमें भारतीय समाजने २६ अक्तूबर, १९१२ को किम्बरलीके टाअुन हालमें जो भोज दिया था, अुसमें दिये गये गांधीजीके भाषणसे।]

मि० ओट्सने हमारे मेहमानको अपनी बड़ी खान देखने ले जाकर बड़ा ममत्व बताया है। जब वे हमारे मेहमानको और मुझे अुस विशाल यंत्रोंवाली खानमें ले गये, तो अुसे देखकर मैं हैरान रह गया। अिस सभामें आये हुअे कुछ मित्र जानते हैं कि मैं यंत्रोंकी हिमायत करनेवाला नहीं हूं। अपनी ओरसे तो मैं बड़ी खुशीसे यह कह सकता हूं कि किम्बरलीमें हीरोंकी खानें और हीरोंको निकालनेके लिअे चल रहे बड़े-बड़े यंत्र न होते, तो भी मैं अुसकी कीमत कम नहीं आंकता। मैं समझता हूं कि अिस समय मैं हीरोंके राजाओंके सामने खड़ा हूं और अिसलिअे अुनको नमन करता हूं। जब अुन विशाल यंत्रोंको मैं देख रहा था, अुस समय अेक बातका मेरे मन पर बड़ा असर हुआ। मैंने सोचा, यदि ये जड़ यंत्र आश्चर्यजनक ढंगसे अेक-दूसरेके साथ रहकर काम कर सकते हैं, तो क्या मनुष्य अेक-दूसरेके साथ मिलकर काम नहीं कर सकते? अिस तरह अगर वे काम कर सकें तो मानव-कुटुम्ब कितना सुखी हो जाय? अैसा हो तो सचमुच तलवारें खेतीके हलोंमें बदल जायं और शेर-बकरी अेक घाट

पानी पीने लगें। मेरे मनमें यह विचार भी आया कि पूरे यंत्रमें अगर अेक पेंच भी ढीला हो जाय तो सारा काम बिगड़ जाय। मनुष्य-जातिके साथ अिस विचारकी तुलना करें तो हमने कअी बार देखा है कि अेक पागल्सी मचानेवाला आदमी सारी सभाको अस्तव्यस्त कर देता है और परिवारका अेक कपूत सारे कुटुम्बकी आबरूको मिट्टीमें मिला देता है। फिर, अिससे अुलटा देखें तो यंत्रका मुख्य भाग यदि ठीक काम करे तो दूसरे भाग भी अपना-अपना काम अच्छी तरहसे करते रहते हैं।

गोखलेके अुद्देश्यको मैं पवित्र अुद्देश्य मानता हूं। किम्बरलीमें बडेसे बड़े यूरोपियन और हिन्दुस्तानी साथ मिलकर अेक मेज पर खाना खाने बैठे। अिस घटनामें गोखले कारणभूत बने, यह मेरे लिअे बडे गौरवकी बात है। टॉल्स्टॉयके जीवन और शिक्षाके अेक नम्र अभ्यासीके नाते मुझे अैसा भी लगता है कि अैसे बड़े समारोह गैरजरूरी हैं और अिनसे कभी-कभी बहुतसे नुकसान — और कुछ नहीं तो पाचन-क्रियामें विघ्न पड़नेका नुकसान — होते हैं। (लोग खिलखिला अुठते हैं) मैं टॉल्स्टॉयके जीवनका अभ्यासी हूं, तो भी अैसे समारोहोंसे यदि अेक-दूसरेको अधिक अच्छी-तरह जानने-पहचाननेका मौका मिलता हो तो मैं अिनमें दोष नहीं निकालूंगा। अिस मौके पर मुझे अेक सुन्दर अंग्रेजी भजन याद आता है — 'वी शेल नो अीच अदर बैटर व्हेन दि मिस्ट्स हैव रोल्ड अवे'। हमारा अज्ञान दूर हो जाय, तो आपसी मतभेदोंके होते हुअे भी हम अेक-दूसरेके भावोंको ज्यादा अच्छी तरह समझ सकते हैं। मेरे प्रख्यात देशबंधु यहां हमारे अज्ञानका अंधकार दूर करनेके लिअे ही आये हैं। भारत भेज सके अैसे अेक अुम्दासे अुम्दा जवाहरके रूपमें वे यहां आये हैं। मैं जानता हूं कि जब मैं गोखलेके कार्योंके विषयमें कुछ कहता हूं, तब अुनकी भावनाओंको ठेस पहुंचती है। फिर भी मुझे अपना यह फर्ज अदा करना चाहिये। हिन्दुस्तानमें गोखलेने राजनीतिक क्षेत्रमें जो कीर्ति पाअी है, अुसके विषयमें मेरे जितना दूसरा यहां कोअी नहीं कह सकता। हिन्दुस्तानके माअिसरॉय तो केवल ५ वर्ष तक ही हिन्दुस्तानको …

रहूं, परंतु जिस हद तक मैं असफल रहूंगा, अुसी हद तक अपनेको मेरे गुरुका अयोग्य शिष्य समझूंगा।

मैं मानता हूं कि राजनीतिक जीवनमें व्यक्तिगत जीवनकी प्रतिध्वनि अुठनी चाहिये। दोनोंके बीच कोअी भेद या अलगाव नहीं होना चाहिये।

अिस सन्त राजनीतिक पुरुषके समागममें मैं अुनके जीवनके अन्त तक रहा। मैंने अुनमें अहंकारका लेशमात्र नहीं पाया। मैं सोशियल सर्विस लीगके आप सब सदस्योंसे पूछता हूं कि क्या आपमें कोअी अहंभाव है? वे राजनीतिक जीवनमें अिसलिअे नहीं पड़े कि अुन्हें लोगोंमें वाहवाही मिले, बल्कि अिसलिअे कि अुनके देशको लाभ हो। वे दुनियाकी प्रशंसा प्राप्त करनेके लिअे नहीं, बल्कि देशकी सेवा करनेके लिअे जीये।

आपके जीवनका भी यही ध्येय होना चाहिये।

(स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ महात्मा गांधी, पृ० १००९-१०)

३

[१० और ११ जुलाअी, १९१५ को पूनामें हुअी पन्द्रहवीं बंबअी प्रान्तीय कान्फरेन्समें गोखलेके संबंधमें पेश किये गये प्रस्तावका अनुमोदन करते हुअे महात्मा गांधीने जो भाषण दिया था, अुसका प्रस्तुत भाग नीचे दिया जाता है।]

अध्यक्ष महोदय, भाअियो और बहनो,

श्रीमती रानडेने हृदयको छूनेवाले जो शब्द कहे, अुसमें कुछ जोड़ना शायद मेरी धृष्टता ही होगी। यह बात कि वे मेरे गुरुके गुरुकी विधवा हैं, सभाकी कार्रवाअीको गंभीरता और पवित्रता प्रदान करती है, जो मेरे कुछ कहनेसे संभव ही हो सकती है। लेकिन चूंकि मैं गोखलेका अेक शिष्य होनेका दावा करता हूं, अिसलिअे अगर मैं अिस प्रसंग पर कुछ व्यक्तिगत बातें कहूं तो आप मुझे माफ कर देंगे। कुछ वर्ष पहले अपने अेक जर्मन मित्र मि० केलनबेकके साथ अेस० अेस० कीनफिन्स नामक जहाज पर मुझे अपने गुरुके साथ

अपने सिर अुठाते हैं (शायद लार्ड कर्जन जैसे लोग सात वर्ष तक अुठा लें) और वह भी बेशुमार कर्मचारियों और अधिकारियोंकी मददसे। लेकिन मेरे ये विख्यात देशबंधु अैसी किसी सहायताके बिना, मातहतोंके बिना और किसी प्रकारके मान-मर्तबे या खिताबोंके बिना सल्तनतका बोझ अकेले ही अुठाये जा रहे हैं। यह सच है कि अुन्हें सी० आअी० अी० का खिताब मिला हुआ है, लेकिन मेरी रायमें वे अिससे कहीं अच्छे और अूंचे खिताबोंके पात्र हैं। गोखले जो खिताब चाहते हैं, वह है अपने देशबंधुओंका प्रेम और अपनी अन्तरात्माकी संमति। पश्चिमकी शिक्षा पाये हुअे भारतीयोंके लिअे वे नम्रता और भलमनसाहतके सुन्दर अुदाहरण हैं।

२६ अक्तूबर, १९१२

२

[मअी १९१५ में बंगलोरमें गोखलेके चित्रकी अनावरण-विधि करते समय दिये गये महात्मा गांधीके भाषणसे।]

मेरे प्रिय देशबंधुओ,

हमें अुन महापुरुषकी स्मृतिका अनादर नहीं करना चाहिये, जिनके चित्रका अुद्‌घाटन करनेके लिअे आपने आज सवेरे मुझसे कहा। मैंने राजनीतिक क्षेत्रमें अपनेको गोखलेका शिष्य जाहिर किया है और अुन्हें मैं अपने राजगुरुके नाते प्रेम करता हूं। और यह दावा मैं भारतीय जनताकी तरफसे करता हूं। यह घोषणा मैंने १८९६ में की थी, और अपने अिस चुनाव पर मुझे कोअी पछतावा नहीं होता।

गोखलेने मुझे सिखाया कि प्रत्येक भारतीयका, जो अपने देशसे प्रेम करनेका दावा करता है, स्वप्न शब्दोंमें देशका गौरवगान करनेका नहीं बल्कि देशके राजनीतिक जीवन और राजनीतिक संस्थाओंको धर्ममय बनानेका होना चाहिये। अुन्होंने मेरे जीवनको प्रेरणा दी और आज भी दे रहे हैं। अुसके अनुसार मैं अपने-आपको पवित्र और धर्ममय बनाना चाहता हूं। मैंने अिस आदर्शके लिअे अपने-आपको अर्पण कर दिया है। संभव है अिसे सिद्ध करनेमें मैं असफल

रहूं, परंतु जिस हद तक मैं असफल रहूंगा, अुसी हद तक अपनेको मेरे गुरुका अयोग्य शिष्य समझूंगा।

मैं मानता हूं कि राजनीतिक जीवनमें व्यक्तिगत जीवनकी प्रतिध्वनि अुठनी चाहिये। दोनोंके बीच कोअी भेद या अलगाव नहीं होना चाहिये।

अुन सन्त राजनीतिक पुरुषके समागममें मैं अुनके जीवनके अन्त तक रहा। मैंने अुनमें अहंकारका लेशमात्र नहीं पाया। मैं सोशियल सर्विस लीगके आप सब सदस्योंसे पूछता हूं कि क्या आपमें कोअी अहंभाव है? वे राजनीतिक जीवनमें अिसलिअे नहीं पड़े कि अुन्हें लोगोंमें वाहवाही मिले, बल्कि अिसलिअे कि अुनके देशको लाभ हो। वे दुनियाकी प्रशंसा प्राप्त करनेके लिअे नहीं, बल्कि देशकी सेवा करनेके लिअे जीये।

आपके जीवनका भी यही ध्येय होना चाहिये।

(स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ महात्मा गांधी, पृ० १००९–१०)

३

[१० और ११ जुलाअी, १९१५ को पूनामें हुअी पन्द्रहवीं बंबअी प्रान्तीय कान्फरेन्समें गोखलेके संबंधमें पेश किये गये प्रस्तावका अनुमोदन करते हुअे महात्मा गांधीने जो भाषण दिया था, अुसका प्रस्तुत भाग नीचे दिया जाता है।]

अध्यक्ष महोदय, भाअियो और बहनो,

श्रीमती रानडेने हृदयको छूनेवाले जो शब्द कहे, अुसमें कुछ जोड़ना शायद मेरी धृष्टता ही होगी। यह बात कि ये मेरे गुरुके गुरुकी विधवा हैं, सभाकी कार्रवाअीको गंभीरता और पवित्रता प्रदान करती है, जो मेरे कुछ कहनेसे खतम ही हो सकती है। लेकिन चूंकि मैं गोखलेका अेक शिष्य होनेका दावा करता हूं, अिसलिअे अगर मैं अिस प्रसंग पर कुछ व्यक्तिगत बातें कहूं तो आप मुझे माफ कर देंगे। कुछ वर्ष पहले अपने अेक जर्मन मित्र मि० केलनबेकके .. अेस० अेस० क्रॉनप्रिन्ज नामक जहाज पर मुझे अपने गुरुके

यात्रा करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। गोखलेने मि० केलनबेकको अपने अेक योग्य साथीके रूपमें स्वीकार किया था, जो अुनके साथ 'कोअिट्स' का खेल खेला करते थे। गोखलेने अिंग्लैंडसे केप टाअुनकी यात्रामें वह खेल सीखा ही था, फिर भी अुन्होंने मि० केलनबेकको लगभग हरा दिया। और मैं आपको यह भी बता दूं कि जहां तक मैं जानता हूं मि० केलनबेक दक्षिण अफ्रीकामें 'कोअिट्स' के होशियारसे होशियार खिलाड़ियोंमें से अेक हैं। अुसके बाद ही हमने भोजन किया, जब गोखलेने खेलके बारेमें मुझसे बातें कीं और कहा, "तुम जानते हो मैं यूरोपियनोंके साथ अैसी होड़में क्यों भाग लेना चाहता हूं? बेशक, मैं अपने देशके खातिर कमसे कम अुतनी कुशलता तो प्राप्त करना ही चाहता हूं, जितनी कि वे दिखा सकते हैं। सही या गलत तौर पर यह कहा जाता है कि बहुतसी बातोंमें हम यूरोपियनोंसे घटिया लोग हैं, अिसलिअे मैं यथाशक्ति यह दिखा देना चाहता हूं" — और ये शब्द अुन्होंने अत्यन्त नम्रतासे कहे — "कि अगर हम अुनसे श्रेष्ठ नहीं हैं तो कमसे कम अुनके बराबरीके तो अवश्य हैं।"

यह अेक प्रसंग हुआ। अुसी जहाज पर हम अपनी प्यारी मातृभूमिसे संबंधित अेक गरमा-गरम चर्चामें लगे हुअे थे, और गोखले मेरे लिअे कार्यक्रमकी रूपरेखा बना रहे थे — अुसी तरह जिस तरह अेक पिता अपने बालकके लिअे बनाता है — जिसके अनुसार कभी फिरसे मातृभूमि जाने पर मुझे काम करना था। अुस संबंधमें अुन्होंने मुझसे कहा था : "हम भारतीय लोगोंमें चारित्र्यका अभाव है; हमारे यहां राजनीतिक क्षेत्रमें धार्मिक अुत्साह पैदा करनेकी जरूरत है।" मैं मानता हूं कि अुनके जीवनका अेक मिशन हमें यह पाठ सिखाना था कि हम जो कुछ भी करें अुसे पूर्णताके साथ करें। अुन्होंने जो कुछ भी किया धार्मिक अुत्साहसे किया; यही अुनकी सफलताका रहस्य था। अुन्होंने धर्मका दिखावा नहीं किया, बल्कि अुसके अनुसार जीवन बिताया। जिस चीजको भी अुन्होंने छुआ अुसे पवित्र बना दिया; जहां कहीं वे गये वहांके वातावरणको अुन्होंने सुवासित कर दिया। जब वे दक्षिण अफ्रीकामें आये, तब अुन्होंने केवल अपनी

वक्तृत्व-शक्तिसे ही नहीं, बल्कि अपने प्रामाणिक चारित्र्य और कार्य करनेकी धार्मिक लगनसे वहाके लोगोंमें नअी चेतना और नअी जागृति पैदा कर दी थी। वह लगन कैसी थी? वे बीमार थे तो भी खास करके जब वे जनरल स्मट्ससे मिलनेवाले थे, लगभग सारी रात जागे। रातभर जागकर अपने देशबंधुओंका केस अुन्होंने अैसी पूर्णतासे तैयार किया कि बोअर सरकारका नेता भी दंग रह गया। जिसका नतीजा क्या हुआ? दक्षिण अफ्रीकाकी सरकारने अुन्हें कुछ वर्षमें ३ पौंडका कर रद्द कर देनेका वचन दिया, और वह कर आज रद्द भी हो चुका है। (तालियां)

(स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ महात्मा गांधी, पृ० ११११-१२)

४

[खाल्हदीना हॉल, कराचीमें मंगलवार, २९ फरवरी, १९१६ को गोखलेके चित्रका अुद्घाटन करते हुअे महात्मा गांधीने नीचेके अुद्गार प्रकट किये थे।]

हैदराबाद (सिन्ध) में भी मुझे गोखलेके चित्रका अुद्घाटन करनेके लिअे कहा गया था। वहां मैंने अपने-आपसे और अुपस्थित लोगोंसे वही प्रश्न पूछा था, जो आज मैं अपनेसे और आपसे पूछता हूं। वह प्रश्न है: मुझे गोखलेके चित्रका अुद्घाटन करनेका और आप लोगोंको जिस विधिमें सम्मिलित होनेका क्या हक है? अलबत्ता, किसी चित्रका अुद्घाटन करना या अुस विधिमें सम्मिलित होना अपने-आपमें कोअी बड़ी या महत्त्वकी बात नहीं है। लेकिन हमें अपने-आपसे जो प्रश्न पूछना चाहिये वह यह है: क्या हमारे हृदय सचमुच अुन महात्माके भव्य अुदाहरणके अनुकरणका निश्चय करनेकी सीमा तक प्रेरित और प्रभावित हुअे हैं? जिस समारोहकी तब तक कोअी सच्ची कीमत नहीं मानी जायगी, जब तक हम अुनके कदमों पर नहीं चलते। अगर हम अुनका अनुकरण करेंगे, तो अपने जीवनमें काफी सफलता प्राप्त कर सकेंगे। बेशक, हम सबके लिअे वह सिद्धि प्राप्त करना संभव नहीं है, जो गोखलेने केन्द्रीय धारासभामें प्राप्त की थी। लेकिन अुन महात्माने जिस सच्ची लगन और अनन्य निष्ठासे राज-

नहीं किया। अपने कुटुम्बकी सेवा तो अुन्होंने अनेक तरहसे की। दूसरे लोग भी सामान्यतः कुटुम्ब-सेवा करते ही होंगे। परंतु कुटुम्ब-सेवा दो तरहसे हो सकती है — अेक स्वार्थदृष्टिसे और दूसरी स्वदेश-हितकी वृत्तिसे। गोखलेने स्वार्थवृत्तिको तिलांजलि दे दी थी। पहले कुटुम्ब, अुसके बाद ग्राम और फिर देश — अिस तरह जिस समय जिसके प्रति कर्तव्य करनेका प्रसंग अुपस्थित हुआ, अुस समय वही कर्तव्य अुन्होंने संपूर्ण साहस, लगन और श्रमसे पूरा किया।

गोखलेके मनमें हिन्दू-मुसलमानके भेदका लेशमात्र भी नहीं था। वे सबको समान दृष्टिसे और स्नेहभावसे देखते थे। कभी-कभी वे नाराज हो जाते थे, लेकिन अुनकी यह नाराजी स्वदेशके हितके साथ संबंध रखनेवाली होती थी और सामनेवालेके मन पर अुसका अच्छा ही असर होता था। अुनका यह गुस्सा अैसा होता था कि जो यूरोपियन पहले अुनके प्रति शत्रुताका भाव रखते थे, वे भी अुनके गाढ़ मित्र बन गये थे।

महात्मा गोखलेको हमारे भारतके अेक समर्थ बलरूप अंत्यज वर्गके अुद्धारका प्रश्न भी सदा चिन्तित रखता था। अुसके लिअे अुन्होंने बहुत प्रयत्न भी किये। अगर कोअी अुन्हें वैसा करते देखकर टोकता, तो वे साफ कह देते थे कि अपने भाअी अंत्यजोंको छूनेसे हम भ्रष्ट नहीं होते, बल्कि अस्पृश्यताकी दुष्ट भावना रखनेसे ही घोर पापमें पड़ते हैं।

अभी मैं यहांके मेघवाल भाअियोंका बुनाअी-काम देखने गया, तब साथमें आये हुअे लड़कोंमें छुआछूतकी बात निकली। अुसे सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ। मैं यहां अभी जाति-पांतिके विषय पर कुछ कहना नहीं चाहता, लेकिन अितना तो कहूंगा कि अिस वर्गको अपने साथ मिलाये बिना हमारी, हमारे गांवकी और हमारे देशकी अुन्नति नहीं होगी। अिसके बिना स्वराज्यकी आशा रखना भी व्यर्थ होगा। जब तक हमारे मनमें अंधश्रद्धा बनी रहेगी, जब तक घरमें, कुटुंबमें, गांवमें और समाजमें लड़ाअी-झगड़े होते रहेंगे, तब तक हम कितना ही स्वराज्य-स्वराज्य चिल्लाते रहें, अुससे कुछ होगा नहीं। आजके [illegible] पहले

पचास करये चलते थे, लेकिन अब केवल दो रह गये है। और वे भी संतोषकारक काम नहीं कर सकते। अिसका कारण आपकी संकुचित वृत्ति है। अुमरेठके नेताओंका कर्तव्य है कि वे अपने देशी अुद्योगोंके विकासमें मदद करें और अुन्हें अुत्तेजन दें। अगर अुनमें अैसी भावना न हो, तो अुन्हें गोखले जैसे परमार्थी संतकी तसवीरके अुद्घाटनका कोओी अधिकार नहीं। पर मुझे लगता है कि अुमरेठ अेकदम भावना और अुत्साहशून्य नहीं है। महात्मा गोखलेके प्रति वह सद्भाव रखता है और अपने कर्तव्यको पहचान गया है, यह संतोषकी बात है।

१९१७

६

[अेक सिन्धी मंडलके द्वितीय वार्षिक अधिवेशन पर दिये गये गांधीजीके भाषणसे।]

भारत-सेवक-समाजकी स्थापना करते समय स्व० गोपाल कृष्ण गोखलेने कहा था कि हमारे देशको अैसे लोगोंकी जरूरत है जो अपने राष्ट्रकी सेवामें दिनके चौबीसों घंटे अुसी तरह लगा दें, जिस तरह ब्रिटिश साम्राज्यको चलानेवाले अंग्रेज लगा देते हैं; वे चौबीसों घंटे केवल ब्रिटिश साम्राज्यका ही विचार करते हैं, दूसरा कुछ सोचते ही नहीं। अिस तरहके सेवक जितने ज्यादा होंगे अुतना ही अच्छा होगा।

मुझसे यह प्रश्न पूछा गया है कि जो कार्यकर्ता अैसी संस्थाओंमें काम करें वे अपनी जीविकाके लिअे कुछ मेहनताना लें या न लें। कुछ लोग हैं जो निर्वाह-भत्ता लेनेको अपना अपमान समझते हैं; वे बिना किसी भत्ते या मेहनतानेके ही काम करना पसन्द करेंगे। लेकिन वे यह महसूस करते मालूम नहीं होते कि अगर हम अिस सिद्धान्त पर अमल करें, तो हमें करोड़पति कार्यकर्ता खोजने होंगे। पर करोड़पति तो गिने-गिने ही हैं और अुन बरसोंमें से कभी-कभी ही हमें स्वेच्छापूर्वक काम करनेवाले सेवक मिलते हैं। मुझे कहना चाहिये कि सिन्ध प्रान्तमें अेक प्रकारका झूठा अभिमान है कि हमें बगैर मेहनताना लिये काम करना चाहिये। अपनी जीविकाके लिअे मेहनताना लेनेमें न केवल कोओी अपमान नहीं है, बल्कि यह सेवकोंका स्पष्ट कर्तव्य है। गोखलेने

दिल्ली-डायरी

गांधीजी

हिन्दुस्तानकी राजधानीमें अपने जीवनके आखिरी दिनोंमें शामकी प्रार्थनाके बाद गांधीजीने हृदयकी गहरी वेदनाको बतानेवाले जो प्रवचन किये थे, अुनमें से ता० १०–९–'४७ से ३०–१–'४८ तकके प्रवचनोंका अिस पुस्तकमें संग्रह किया गया है। यही अुनका राष्ट्रको आखिरी संदेश कहा जा सकता है।

कीमत ३.०० डाकखर्च १.१९

भाषावार प्रान्त

लेखक : गांधीजी; संपा० भारतन् कुमारप्पा

आज हमारी सरकार और देशकी जनता भाषाके आधार पर प्रान्तोंके पुनर्विभाजनके प्रश्न पर विचार कर रही है, तब अिस विषय पर अिस छोटीसी पुस्तिकामें दिये गये गांधीजीके विचार बहुत अुपयोगी सिद्ध होंगे। गांधीजी अिस बातके लिअे बड़े अुत्सुक थे कि अनावश्यक विलंब किये बिना भाषाके आधार पर प्रान्तोंका पुनर्गठन कर दिया जाय और हर प्रान्तको अुसकी मातृभाषाके जरिये शिक्षा दी जाय।

कीमत ०.२५ डाकखर्च ०.१३

सच्ची शिक्षा

लेखक : गांधीजी; अनु० रामनारायण चौधरी

अिस पुस्तकमें शिक्षाका स्वरूप, आदर्श, माध्यम वगैरा आजके शिक्षा-संबंधी प्रश्नोंका समुचित और विस्तृत अुत्तर पाठकोंको मिलेगा।

कीमत २.०० डाकखर्च १.००